|| ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ||

स्पिरिचुअल साइंस



Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

विश्व में धार्मिक क्रांति के प्रणेता

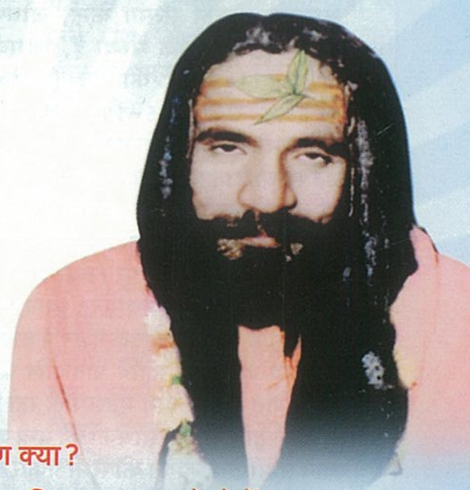
समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का

सिद्धयोग

आध्यात्मिक उत्थान एवं रोग मुक्ति हेतु

(एक संक्षिप्त परिचय)





प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर पर 15 मिनट ध्यान करके देखें।

"आध्यात्मिक सत्ता के अधीन, अगर भौतिक सत्ता का उपयोग संसार में किया जाय तो यह संसार स्वर्ग बन सकता है। आध्यात्मिक चेतना के बिना 'भौतिक-ज्ञान' बन्दर के हाथ में उस्तरा देने के समान है।"

-सद्गुरुदेव सियाग

।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

जोधपुर (राज.)



AVSK-JODHPUR

परिचय

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शुद्ध रूप से एक धार्मिक संस्था है, जिसकी स्थापना सन् 1993 में की गई (पंजीयन संख्या–09, दिनांक 10–5–1993, जोधपुर) जो राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग में रजिस्टर्ड संस्था है। इस संस्था के संस्थापक एवं संरक्षक प्रवृतिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग है। संस्था का प्रधान कार्यालय, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) में स्थित है। सद्गुरुदेव द्वारा संचालित ध्यान योग एवं मंत्र दीक्षा से भारतीय वैदिक दर्शन में वर्णित कश्मीरी शैव दर्शन एवं महर्षि पातंजलि योग दर्शन में वर्णित अष्टांग योग मूर्तरूप ले रहा है, जिससे उनके द्वारा दीक्षित साधकों को मन्त्र जप एवं ध्यान से भौतिक जीवन की सभी प्रकार की समस्याओं, शारीरिक रोगों एवं नशों से सहज में मुक्ति मिल रही हैं। महर्षि श्री अरविन्द ने कहा था कि ''आगामी मानव जाति दिव्य देह धारण करेगी।'' यह उक्ति गुरुदेव द्वारा संचालित सिद्धयोग से मानवता में मूर्तरूप ले रही है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

उद्देश्य

✦ समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।

✦ विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत सार्वभौम सिद्धान्त के अनुसार मन मन्दिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

✦ विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवा कर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह सत्य प्रमाणित करना।

✦ विश्व कल्याण हेतु सम्पूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।

✦ विश्व के सभी सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।

✦ सिद्धयोग में वर्णित ''शक्तिपात दीक्षा'' द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से ''त्रिगुणातीत'' जाति में बदलकर उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

"मानवता में सतोगुण का उत्थान और तमोगुण का पतन करने संसार में अकेला ही निकल पड़ा हूँ। मुझ पर किसी भी जाति–विशेष, धर्म–विशेष तथा देश–विशेष का एकाधिकार नहीं है।"

– सद्गुरुदेव सियाग



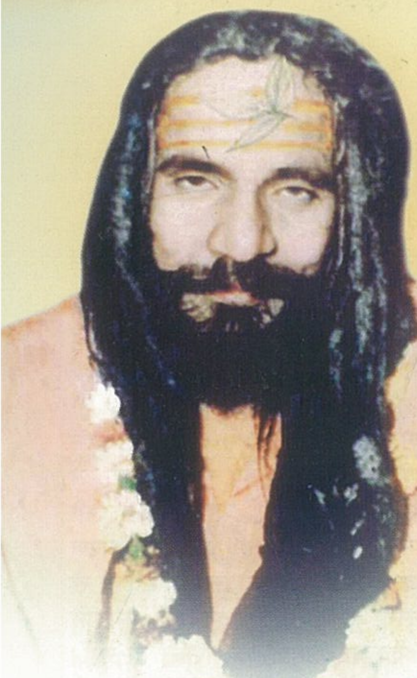
पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

जीवन परिचय

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग प्रवृतिमार्गी संत हैं। गुरुदेव का अवतरण (जन्म) बीकानेर के पलाना ग्राम में 24 नवम्बर 1926 को हुआ । गुरुदेव रेलवे में हैडक्लर्क के पद पर कार्यरत थे। परिस्थितियोंवश गुरुदेव ने सन् 1968 से गायत्री की आराधना शुरू की और 1 जनवरी, 1969 में गुरुदेव को गायत्री (निर्गुण) की सिद्धि हो गई। स्वामी विवेकानन्द जी को पढ़ने के पश्चात् गुरुदेव ने जामसर में आराधना कर रहे बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी को गुरु धारण कर लिया, जिनकी अहैतुकी कृपा से सन् 1984 में गुरुदेव को भगवान् श्रीकृष्ण (सगुण) की सिद्धि हो गई। इन दोनों सिद्धियों के कारण से गुरुदेव में शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुंडलिनी जागरण की सामर्थ्य आ गई। बाबा श्री गंगाईनाथ जी के आदेश से सन् 1986 में रेलवे से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली तथा जन कल्याण हेतु सन् 1990 से सार्वजनिक रूप से शक्तिपात–दीक्षा देना प्रारम्भ कर दिया। इस दर्शन को विश्व दर्शन बनाने हेतु 1993 में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की स्थापना की। तब से आज तक सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात–दीक्षा से गुरुदेव हजारों–लाखों लोगों को चेतन कर चुके हैं।

बाबा श्री गंगाईनाथ जी का आश्रम, जामसर (बीकानेर)

जीवन परिचय



बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी आईपंथी नाथ सम्प्रदाय के संन्यासी योगी थे। उनका जन्म राजसमंद जिले के सिरमा ग्राम में हुआ। वे बाल्यकाल से ही ईश्वर की भक्ति में लीन रहते थे। उनका प्रारम्भिक आराधना काल आईपंथी नाथों के अस्थलभोर अखाड़े (हरियाणा), बनारस व हिमाचल प्रदेश में बीता। फिर काजलवास (ग्यारह नाथों की जीवंत समाधियाँ) नामक स्थान पर आराधना कर रहे नाथ योगी बाबा श्री भाऊनाथ जी ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से गंगाईनाथ जी को बुलाया तथा अपनी शक्तिपात की सम्पूर्ण सामर्थ्य प्रदान की। उसके पश्चात् वे कुछ वर्षों तक काजलवास में ही रहे। उसके कुछ वर्षों बाद अपनी आन्तरिक प्रेरणा से बीकानेर के पास जामसर नामक स्थान पर, रेत के टीले पर धूणा स्थापित कर, लम्बे समय तक तपस्या की। फिर अप्रेल 1983 में अपनी योग शक्ति से बीकानेर रेलवे में कार्यरत् गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग को बुलाकर, गुरुपद सौंपकर आदेश दिया कि **"वैदिक दर्शन को विश्व दर्शन बनाना है।"** तत्पश्चात् 31.12.1983 को जामसर में ही समाधिस्थ हो गये। वर्तमान में यह स्थान बीकानेर शहर से उत्तर दिशा की ओर श्री गंगानगर रोड़ पर 27 कि. मी. दूरी पर स्थित है। **A.V.S.K., जोधपुर**



बाबा श्री गंगाईनाथ जी, समाधि स्थल (Tomb)



ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

विश्व में धार्मिक क्रांति के प्रणेता सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का

"सिद्धयोग"

आध्यात्मिक उत्थान एवं रोग मुक्ति हेतु
(एक संक्षिप्त परिचय)

-:आदेश:-

"अपने-अपने Level (स्तर) पर इस दर्शन का प्रचार-प्रसार करो, International Level (अन्तर्राष्ट्रीय स्तर) पर। मैं अकेला ही इस धर्म का ठेकेदार थोड़े ही हूँ; आप सभी की भी ड्यूटी बनती है।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मंत्र दीक्षा के लिए डायल करें- 07533006009

-प्रकाशक-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, पोस्ट बॉक्स नं. 41,
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत-342003
Contact- 0291-2753699, मो. नं. 09784742595
Website- www.the-comforter.org
Printer:- Garvit Offset Printers, Jodhpur
मूल्य- 10/-



अनुक्रम



मैं न्यूटन की "आखिरी इच्छा" को



पूर्ण करने आया हूँ।

13.01.1991



उसने कहा था-"मैं जब अपने पूरे जीवन पर नजर डालता हूँ तो पाता हूँ कि मैं एक अबोध बालक की तरह समुद्र के किनारे सीपियाँ और समुद्री घोंघों की हड्डियाँ ही चुनता रहा। अब, मैं अन्तिम समय में, जब उस **विशाल समुद्र** को देखता हूँ तो सोचता हूँ कि मैंने कुछ भी प्राप्त नहीं किया। इस विशाल समुद्र की खोज से ही "**शांति**" संभव होगी।"

यही नहीं मैं उन्हें उस तत्त्व की **प्रत्यक्षानुभूति** और **साक्षात्कार** करवाने आया हूँ, जिसकी खोज हमारे **ऋषि-मुनियों** ने की थी। **उन्होंने इस** भौतिक सूर्य जैसे **लाखों सूर्य देखे**। इसके अतिरिक्त उन्होंने देखा कि एक ऐसा **ऊर्जा का पुंज** है, जो इन लाखों सूर्यों को प्रकाशित कर रहा था। उन्होंने उस तत्त्व का जो ज्ञान प्राप्त किया है, मैं उसकी **प्रत्यक्षानुभूति** और **साक्षात्कार** कराने ही संसार में निकला हूँ।

यह ज्ञान मुझे मेरे संत सद्‌गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी महाराज की "**अहैतुकी कृपा**" के कारण ही प्राप्त हुआ है। अतः मैं इसे "**गुरु-प्रसाद**" की संज्ञा देता हूँ।

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"विश्व-शांति"

-सद्गुरुदेव सियाग

"विश्व शांति के लिए सभी बहिर्मुखी बौद्धिक प्रयास असफल हो चुके हैं, क्योंकि शांति अंदर से आती है; शांति का संबंध दिल से है। अतः "अन्तर्मुखी आराधना" द्वारा उस परमसत्ता से जुड़े बिना, शांति असंभव है।"

आज पूरे विश्व में शांति के भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। वैज्ञानिक व राजनीतिज्ञ बाहरी प्रयासों व हथियारों से शांति स्थापित करने में लगे हुए हैं। अशांति उतनी ही तेज गति से बढ़ रही है। वर्तमान मानव शांति का प्रयास बाहर ढूँढ़ रहा है **जबकि असीम शांति का अकूट भण्डार तो मानव के भीतर है।**

इस संबंध में "**पवित्र ग्रंथ बाइबल की भविष्यवाणियाँ**" पुस्तक में **सद्गुरुदेव सियाग** ने वर्षों पहले लिख दिया है कि यदि मानव संपूर्ण विश्व में शांति चाहता है तो उसे अपने भीतर की गहराइयों में उतरना पड़ेगा और उसका पथ है सिद्धयोग में समर्थ सद्गुरुदेव द्वारा बताई गई आराधना। **"जब तक संसार में मनुष्य शरीर-रूपी सुन्दर ग्रंथ को पढ़ने का दिव्य विज्ञान प्रकट नहीं होगा, तब तक विश्व शांति का भाव "मृगमरीचिका" ही बना रहेगा।"**

पुस्तक की प्रस्तावना के 'दो शब्दों' में विस्तार से लिखा है-

वर्तमान में संसार में धार्मिक ग्रन्थों की संख्या अन्य ग्रन्थों से अधिक है और उनका पठन-पाठन भी सबसे अधिक होता है परन्तु फिर भी सम्पूर्ण विश्व में अशांति का एक छत्र साम्राज्य है। दूसरी तरफ शांति के लिए जितने प्रयास किए जाने चाहिए, भौतिक-विज्ञान के आचार्य कर चुके, तथा पूरी तरह से असफल भी हो चुके हैं। जिन विध्वंसक हथियारों के बनाने में वे असीम धन खर्च कर चुके हैं, प्रायः उतना ही धन अब उनको नष्ट करने में लगेगा। क्या घातक हथियार नष्ट भी किए जा सकेंगे या नहीं, यह प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। **इनको नष्ट करने में जितना समय और धन लगने का हिसाब लगाया गया है,उससे तो यही तथ्य प्रकट होता है कि ये हथियार जिस कार्य के लिए बनाए गए है, उसी में प्रयोग होंगे।** घातक हथियारों द्वारा स्थापित,भय मिश्रित-शांति, सर्वनाश का कारण ही सिद्ध होगी। धर्म के बारे में एक व्याख्या मुझे पूर्ण सत्य लगती है, वह हैः-

'धर्म का प्रमाण किसी ग्रंथ पर नहीं, मनुष्य की रचना की सत्यता पर निर्भर है। ग्रंथ तो मनुष्य की रचना के बहिंगमन हैं, बौद्धिक परिणाम हैं, मनुष्य ही इन ग्रंथों के प्रणेता हैं।' इससे एक बात स्पष्ट होती है कि जब तक संसार में मनुष्य शरीर-रूपी ग्रंथ को पढ़ने का दिव्य विज्ञान प्रकट नहीं होता,शांति पूर्ण रूप से असम्भव है। हम देख रहे हैं, संसार में बौद्धिक प्रयासों द्वारा शांति स्थापित करने के सभी प्रयास असफल हो चुके हैं। वैज्ञानिकों ने जो हथियार मानव के लिए बनाये थे, उन्हीं से मानव अब अधिक भयभीत है।

सभी उन्हें अतिशीघ्र नष्ट करने का प्रयास कर रहें हैं, परन्तु विश्व में परिवर्तन का जो तूफान आरम्भ हो गया है, वह उन्हें क्या ऐसा करने देगा? संसार में धर्म और जाति के नाम पर जो नया ध्रुवीकरण प्रारंभ हो गया है, उसकी गति तेज होती ही जावेगी। **यह भी संभव है कि यह संकीर्ण ध्रुवीकरण ही विश्व के महाविनाश का मुख्य कारण बन जाए।**

संसार भर के सभी धर्म जब तक "**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**" के वैदिक सिद्धांत को पूर्ण सत्य मानकर उसके अनुसार आचरण प्रारम्भ नहीं करेंगे, तब तक शांति केवल कल्पना का ही विषय रहेगी। सभी धर्मों के धर्माचार्यों की कथनी और करनी में भारी अंतर है। सभी मूलभूत सिद्धातों को मानने का मात्र झूठा स्वांग रच रहे हैं। संसार में मोटे तौर से तीन बल- **धनबल, जनबल और मनबल** माने गये हैं। इस समय संसार पूर्णरूप से पहले दो बलों (शक्तियों) का ही उपयोग कर रहा है। हम स्पष्ट देख रहे हैं, '**धनबल**' अपनी सुरक्षा के लिए '**जनबल**' का उपयोग ढाल(**कवच**)के रूप में कर रहा है। इस प्रकार हम देख रहे हैं कि '**धन**'(माया) का संसार पर एक छत्र साम्राज्य है। इस संबंध में मुझे मेरे एक मित्र की राजस्थानी भाषा की एक कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आ गई। कविता का शीर्षक था- "**लिछमी**"

हद हुकम हेकड़ी आ लिछमी, मिनखां ने नाच नचावे है,
कोई भूख मरे,कोई मोज करे, कोई नर माटी बण जावे है,
आ-लिछमी बड़ी बावळी-गेली, मिनख जींवता खावे है।

आध्यामिक जगत् के लोग, धर्म के नाम पर केवल अतीत के गुणगान मात्र करके इतिश्री कर रहे हैं। जबकि हमारे दर्शन के अनुसार '**ईश्वर**' **प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है।** '**मनबल**', जो कि हमारे दर्शन के अनुसार **सर्वोत्तम-बल** है, संसार से लोप प्रायः हो चुका है। भारत, 'मनबल' के सहारे ही अनादिकाल से विश्व द्वारा पूजा जाता रहा है, और पुनः उसी के सहारे ही अपने **स्वर्णयुग** में प्रवेश करेगा। महर्षि श्री अरविन्द ने इस संबंध में कहा है- "पश्चिम के लोग भौतिक जीवन को उसकी चरम सीमा तक पहुँचा चुके हैं। अब एक ऐसी चीज की जरूरत है, जिसे देना उनके वश की बात नहीं है। क्योंकि यह कार्य **आत्मा और अंतःचेतना की अभिवृद्धि** द्वारा ही होगा, और इसका प्रारंभ भारत ही करेगा।" इसके साथ ही महर्षि ने भारत के भविष्य के बारे में स्पष्ट शब्दों में कहा है-

"**भारत**, जीवन के सामने '**योग**' का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह '**योग**' के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और '**योग**' के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।"

पुस्तक लिखने का यह प्रयास मात्र विश्व के जिज्ञासु जनों को सप्रेम आमंत्रित करना हैं। दूसरी पुस्तकों की तरह यह भी उस दिव्यज्ञान की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार नहीं करवा सकेगी। मनुष्य को उस दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तो अपने शरीर-रूपी ग्रन्थ को ही पढ़ना पड़ेगा, क्योंकि उसका निवास हमारे शरीर में ही है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के 18 वें अध्याय के 61 वें श्लोक में स्पष्ट कहा है-

ईश्वरःसर्वभूतानां हृदेशेअर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारुढानि मायया।।

हे अर्जुन ! शरीररूपी यंत्र में आरूढ़ हुए संपूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूतप्राणियों के हृदय में स्थित है। ईसाइयों के पवित्र धार्मिक ग्रंथ बाइबल में भी इस संबंध में 2 कुरिन्थियों के 6' 16 में स्पष्ट कहा है:-

''और मूरतों के साथ परमेश्वर का क्या संबंध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मंदिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा कि मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला-फिरा करूँगा; मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे।''

यीशु मसीह सहित संसार के प्राय: सभी भविष्यद्रष्टाओं ने एक स्वर में यही कहा है कि 20 वीं सदी का आखिरी दशक संसार में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन लावेगा। सभी ने एक ही स्वर में भविष्यवाणी की हैं कि 21 वीं सदी में भारत अपने स्वर्णयुग में पुन: में प्रवेश कर जावेगा, और धर्म और कर्म के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व करने लगेगा। पवित्र धार्मिक ग्रंथ बाइबल विश्व-व्यापी भीषण नरसंहार की जो घोषणा करता है, विश्व के अविश्वासी नास्तिक उसकी तरफ ध्यान दें या न दें, उसमें कोई अन्तर नहीं आने वाला है। क्या मृत्यु ने कभी किसी को माफ किया है ? कालचक्र अनादिकाल से सबको निगलता आया है और निगलता रहेगा। उस निर्दोष पवित्रात्मा यीशु मसीह ने प्राणरक्षा के लिए कैसी करुण पुकार की थी, परन्तु फिर भी क्या वह अपने प्राण बचा सका ?

''तब उसने कहा, मेरा जी बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरे प्राण निकलता चाहते हैं, तुम ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो। फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर, मुँह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा कि हे मेरे पिता ! यदि हो सके तो यह कटोरा मुझसे टल जाए तो भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।''

बाइबल अपनी भविष्यवाणियों के संबंध में स्पष्ट कहती है कि **''प्रभु का दिन चोर की नाई (तरह) आवेगा।''** उन दिनों में कितना भयंकर संकट होगा, उस संबंध में कहा है- ''क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे कि सृष्टि के आरम्भ से, जो परमेश्वर ने सृजी है, अब तक न तो हुए, और न फिर कभी होंगे। और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता तो कोई भी प्राणी न बचता, परन्तु उन चुने हुओं के कारण, जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया है।'' उन दिनों में मानव को कितना भयंकर कष्ट होगा, उसका अन्दाज बाइबल की निम्नलिखित पंक्तियों से लगाया जा सकता है- **''उन दिनों में मनुष्य मृत्यु को ढूँढेंगे, और न पाएँगे, और मरने की लालसा करेंगे, और मृत्यु उनसे (दूर) भागेगी।''**

बाइबल का उपर्युक्त वर्णन कितना दिल दहलाने वाला है, कहने की आवश्यकता ही नहीं। परन्तु इस पवित्र ग्रंथ को मानने वालों की वस्तु-स्थिति को ध्यान से देखा जाए तो ऐसा लगेगा कि अब प्रलय का समय अधिक दूर नहीं है। धार्मिक स्थानों में जो कुछ भी होता है, उस पर कितने सुंदर ढंग से पर्दा डाला गया है- ''परमेश्वर का परिवार पापियों से मिलकर बना है। यदि आप परमेश्वर के परिवार के लोगों में पूर्ण या लगभग-पूर्ण लोग देखने की अपेक्षा करते हैं तो आपको निराश होना पड़ेगा।'' यह कलियुग के गुणधर्म के कारण है।

प्राय: सम्पूर्ण विश्व की एक जैसी ही स्थिति है। मैं तो इस संबंध में सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि प्रभु विश्व भर के सकारात्मक विचारों वाले मनुष्यों

को शीघ्र सद्बुद्धि प्रदान करें क्योंकि नकारात्मक विचारों वाले व्यक्ति न कभी सुधरे हैं, और न कभी सुधरेंगे। रावण, कंस, दुर्योधन आदि अनेक उदाहरण हर युग में मिलेंगे।"

इस सिद्धयोग दर्शन पुस्तक में सिद्धयोग, कुण्डलिनी, अवतार, गुरु, मृत्यु, साधकों के अनुभव, मंत्र, गुरुदेव व दादा गुरुदेव का जीवन परिचय व विश्व में आगामी मानव जाति में होने वाले दिव्य परिवर्तन को रेखांकित किया गया है।

आशा करता हूँ कि संपूर्ण मानव जाति को इस जानकारी से सत्य का मार्गदर्शन मिलेगा। अन्तर्मुखी आराधना द्वारा अपने भीतर की गहराइयों में उतर कर जीवन के परम लक्ष्य 'मोक्ष' को पा सकेगा तथा वैदिक दर्शन के महावाक्य 'तत्त्वमसि' (तू वही है....) के स्वरूप को जान पाएगा। संत कबीरदास जी के इन्हीं शब्दों के साथ कि -

मेरा मुझमें कछु नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।।

सद्गुरु देव के श्री चरणों में सादर समर्पित है। - **सम्पादक**

सनातन धर्म का उत्थान

"अब इस देश का, इस धर्म का, इस संस्कृति का उत्थान शुरू हो गया है। हमारे पतन के काल को ऋषि-मुनि नहीं रोक सके, क्योंकि कालचक्र अबाध गति से चलता है। अब इस दर्शन का उत्थान चक्र शुरू हो गया है, संसार की कोई शक्ति इसके उत्थान को नहीं रोक सकती है, किसी में वो सामर्थ्य नहीं है।

श्री अरविंद के अनुसार-"इसे रोकने की कल्पना करना ही पागलपन है।"

"आज तो हमने हिंदू धर्म को बहुत संकीर्ण दायरे में कैद कर लिया है। हिन्दू तो "वसुधैव कुटुम्बकं" के सिद्धांत में विश्वास रखता है। मनुष्य मात्र को ईश्वर की संतान मानता हैं।".

"हिन्दू कभी धर्म परिवर्तन की बात नहीं करता है, वो तो मनुष्य के परिवर्तन की बात करता है और परिवर्तन ही नहीं Transformation **(रूपान्तरण) की बात करता है,** Transformation **शुरू हो गया है विश्व स्तर पर।"** ***-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग***

"मेरे आध्यात्मिक जीवन का प्रारम्भ"

12/02/1988

 *समर्थ सद्गुरुदेव श्रीरामलालजी सियाग* 

मैं मेरे प्रारम्भिक जीवन में, पूर्ण रूप से निरीश्वरवादी व्यक्ति रहा हूँ। ईश्वर नाम की किसी शक्ति में मुझे कोई विश्वास नहीं था। मैं, मानव की एक मात्र सत्ता में ही विश्वास रखता था, क्योंकि प्रारम्भ से ही मैं नौकरी में मजदूर संगठन में काम करने वाले व्यक्तियों के सम्पर्क में आ गया था।

अतः मेरा झुकाव राजनीति की तरफ अधिक होता गया। **''मेरा मूल रूप से यह स्वभाव रहा है कि मैं अपनी मान्यताओं पर हमेशा अडिग रहता हूँ।''** इस प्रकार अपने पथ पर चलकर कम से कम समय में हर काम को पूरा करके उसके परिणाम की अपेक्षा करता हूँ। ***मैं ऐसे किसी काम में विश्वास नहीं रखता हूँ, जो लम्बे समय तक कोई परिणाम न दे।***

मेरी मान्यता है कि जिस प्रकार किसी खाद्य पदार्थ को मुख में डालते ही उसके स्वाद की प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है, उसी प्रकार हर काम के बारे में प्रत्यक्षानुभूति होनी चाहिए। परिणाम के अभाव में कोई भी काम करना व्यर्थ समझता हूँ। आज की **''बहिर्मुखी''** आध्यात्मिक आराधना से कोई प्रत्यक्षानुभूति नहीं होती है, केवल अंधविश्वास के सहारे मनुष्य पूरे जीवन, कर्मकाण्ड में उलझा रहता है, परन्तु फिर भी उसे कुछ नहीं मिलता। इस युग के चतुर धर्म गुरुओं ने बहुत चतुराई से मान्यताएँ और सिद्धान्त बना रखे हैं। **हर काम का (धार्मिक) परिणाम अगले जन्म में मिलेगा, अतः श्रद्धा और विश्वास के साथ जीवन भर तेली के बैल की तरह मनुष्य को चलाते रहते हैं।** इस प्रकार संसार के असंख्य मनुष्यों का जीवन निरर्थक बना रखा है। यही कारण था कि मैं, धीरे-धीरे पूर्ण

नास्तिक बन गया। **क्योंकि मेरा यह स्वभाव है कि मैं जैसा सोचता हूँ, वही कहता हूँ और जो कहता हूँ वही करता भी हूँ।** लोग मात्र कहने को नास्तिक हैं, थोड़ा कष्ट आते ही नास्तिकता काफूर हो जाती है। रूस जैसे देश ने भी दूसरे विश्व युद्ध में सभी धर्मों के प्रार्थना स्थल पुनः खोल दिए थे।

परन्तु मैं कालीदास की तरह अपने हठ पर अड़ा ही रहा। इस प्रकार ज्योंही यह अति अपनी चरम सीमा का अतिक्रमण करने लगी, भारी विस्फोट हो गया। जैसी स्थिति हीरोशिमा वासियों की हुई, मैं ठीक वैसी ही स्थिति में पहुँच गया। ऐसी विचित्र **भयावह मानसिक** स्थिति हो गई कि कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। सारे भौतिक उपचार असफल हो गए। स्थिति ऐसी भयंकर हो चुकी थी कि मैं स्वयं यह सोचने लगा कि अब अन्तिम समय अधिक दूर नहीं है। **ऐसी स्थिति में मेरे एक मित्र श्रीराम दुबे ने गायत्री मंत्र का जप करने की सलाह दी।** मैं जिस सत्ता में कुछ भी विश्वास नहीं रखता था, मृत्यु भय के कारण जैसा बताया, वैसा करने को सहर्ष तैयार हो गया। **उस समय की मेरी मानसिक स्थिति ऐसी थी कि एक तरफ तो मृत्यु मुँह बाये खड़ी थी, दूसरी तरफ उस अदृश्य शक्ति से प्राण रक्षा की करूण पुकार कर रहा था।** ऐसी स्थिति में **''एकाग्रता''** और **''करूण पुकार''** कैसी होगी ? आसानी से समझी जा सकती है। विधिवत् **सवा लाख जप** करने का लक्ष्य था और इस प्रकार करीब साढ़े तीन महीने का समय इस कार्य में लगा।

इतने लम्बे समय तक भी एकाग्रता और करूण पुकार की स्थिति निरन्तर एक जैसी ही बनी रही। प्रातः चार बजे उठ कर, सवा सात बजे तक और शाम को सात से नौ बजे तक यह जप का कार्यक्रम अबाध गति से चलता रहता था। जिस दिन सवा लाख जप पूरे हो गए, उसके अगले दिन जप बन्द कर दिया। परन्तु आदत वश प्रातः ही ठीक चार बजे नींद खुल गई। क्योंकि जप करना नहीं था; आँख बंद किये बिस्तर पर ही लेटा रहा। सन् 1968 की सर्दी में प्रारम्भ होने वाली नवरात्रा से जप प्रारम्भ किया था। अतः काफी सर्दी पड़ रही थी। मैं रजाई ओढ़े आँख बंद किए लेटा हुआ था कि क्या देखता हूँ कि **''मेरे अन्दर नाभि से लेकर कण्ठ तक एक अजीब प्रकार की सफेद रोशनी ही रोशनी दिखाई दी।''** रोशनी के अलावा शरीर का कोई अंग जैसे लीवर, तिल्ली, फेफड़े, हार्ट आदि कुछ भी दिखाई नहीं दिया। मुझे यह देखकर अचम्भा हो रहा था कि रोशनी आँखों से दिखती हैं, फिर यह अन्दर कैसी रोशनी है ? इसके अतिरिक्त ऐसी भयंकर सफेद रोशनी में भी कोई अंग क्यों दिखाई नहीं देता है ? **मैं ज्यों ही उधर अधिक एकाग्र हुआ तो मुझे भँवरे के गुँजन की आवाज सुनाई दी जो कि नाभि में से आ रही थी।** मैंने सोचा पेट में भँवरे की आवाज कैसे आ रही है ?

ज्यों-ज्यों मैं, उस आवाज की तरफ एकाग्र होता गया, मुझे स्पष्ट सुनाई देने लगा कि गायत्री मंत्र अपने आप ही अन्दर जपा जा रहा है, उसको जपने वाला कोई नजर ही नहीं आया फिर भी वह अबाध गति से निरन्तर चलता रहा। **करीब 10-15 मिनटों तक यह सब देखता, सुनता रहा और अपने मन में सोचता रहा कि कैसी विचित्र बात है कि**

रोशनी आँख से आती है और आवाज कण्ठ से परन्तु यह सब उन अंगों से बहुत नीचे ही कैसे सुना और देखा जा रहा है? करीब पाँच बजे स्नान घर में नल का पानी जोर से फर्श पर गिरा तो ध्यान भंग हो गया। बच्चों ने शाम को नल खुला छोड़ दिया था।

इसके बाद उठकर नित्यकर्म से निवृत्त हो कर अपने कार्य पर चला गया। सोचा; इतने लम्बे समय तक एक ही कार्यक्रम चलने और निरन्तर ध्यान उधर ही रहने के कारण ऐसा ख्याल रह गया होगा। परन्तु इसके बाद एक ऐसा परिवर्तन आ गया कि मैं पान, सिगरेट, चाय आदि का प्रयोग करने में पूर्ण रूप से असमर्थ हो गया। इनके इस्तेमाल का ख्याल आते ही बहुत भयंकर घबराहट होने लगती थी। इस प्रकार चाहते हुए भी मेरे लिए इन वस्तुओं का इस्तेमाल करना असम्भव हो गया। किसी के साथ खाना खाते और जीवन के किसी भी क्षेत्र में मुझे थोड़ा सा भी झूठ बोलते हुए भी भारी घबराहट होती थी।

क्योंकि जप पूर्ण रूप से बन्द कर चुका था। अतः धीरे-धीरे यह स्थिति शान्त हो गई और एक साधारण व्यक्ति की तरह, मैं फिर जीवन व्यतीत करने लगा। परन्तु एक विचित्रता शरीर में आ गई कि जीवन के किसी उद्देश्य पर अगर मेरा दिल-दिमाग अधिक एकाग्र होकर सोचने लगता तो उसका स्पष्ट परिणाम टेलीविजन की तरह बहुत पहले स्पष्ट नजर आ जाता और आगे चलकर वह घटना ठीक वैसे ही घटती जैसी मुझे दिखी थी। इस प्रकार करीब साल भर तक मुझे असंख्य प्रमाण निरन्तर मिलते ही गए और सभी भौतिक जगत् में ठीक वैसे ही घटित होते चले गये जैसे मुझे दिखे थे।

"शब्दों के एक पुँज में ऐसी विचित्र सामर्थ्य और शक्ति होती है, उसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी।"

अतः जिज्ञासावश मैंने फिर आराधना करने की सोची। विचार आया उस बड़ी शक्ति की आराधना करने का निर्णय लेकर, आराधना प्रारम्भ कर दी। भगवान् श्री कृष्ण की तस्वीर, गायत्री की तरह सामने रख कर **कृष्ण के एक बीज मंत्र का जप** प्रारम्भ कर दिया। इसकी न तो कोई निश्चित संख्या तय की और न कोई विशेष उद्देश्य। इसी जिज्ञासा से कि देखें कब क्या होता है? उसी क्रम से सुबह-शाम करीब ढाई तीन सालों तक जप चलता रहा। एक दिन विचार किया कि गायत्री मंत्र से तो कोई सौ गुणा से भी अधिक संख्या हो चुकी होगी फिर अभी तक वैसी ही कोई अनुभूति तो नहीं हुई, ऐसा सोचना था कि एक विचित्र स्थिति पैदा हो गई। **हर समय एक परछाई तिरछी नजर से दिखाई देने लगी।**

जब सीधा देखता तो कुछ नहीं दिखता। सोचा आँखों की कोई बीमारी हो गई है, डॉक्टरों के पास गया, परन्तु ऐसी कोई बीमारी नहीं निकली। वह क्रम और जप चलता रहा। एक दिन विचार आया कि अपने को इस विद्या का कोई ज्ञान तो है नहीं, कहीं व्यर्थ कष्टों में फँस जाएंगे, मंत्र जप बन्द कर दिया, परन्तु परछांई दिखनी बन्द नहीं हुई। **सोचा इसे कुछ नुकसान तो नहीं हो रहा है, दिखती है तो दिखने दो।**

इस प्रकार जप बन्द किये कुछ ही समय बीता होगा, एक रात्रि को मैं अपने गाँव में सो रहा था। करीब पाँच बजे प्रातः एक आवाज सुनाई दी और उसने स्पष्ट कहा कि **"बेटा अब**

केवल 'कृष्ण' का जप कर।'' यह आवाज स्पष्ट रूप से दो बार सुनाई दी। अचानक मेरी आँख खुल गई, पर किसने आवाज दी, कुछ समझ नहीं सका। परन्तु फिर भी मैंने जप बन्द रखा। वर्षों की आदत थी, बिना जप के कुछ अटपटा सा लग रहा था।

एक दिन विचार आया **''बेटा''** शब्द से सम्बोधित करके आवाज दी है, अतः जो भी भला बुरा होगा, उसकी जिम्मेदारी, आवाज देने वाले की ही होगी। मैं इसके दोष का भागी क्यों बनूँगा? इसी विचार के साथ सभी प्रणव हटाकर केवल **'कृष्ण'** का जप प्रारम्भ कर दिया। छोटा सा शब्द और फिर गति पकड़ने पर, पहले वाले से दस गुणा से भी तेज गति से चलने लगा।



करीब साल भर हुआ होगा कि एक बहुत ही विचित्र घटना घट गई। एक दिन प्रातः करीब चार बजे के आसपास अर्द्ध जाग्रत अवस्था में क्या देखता हूँ कि ''मैं एक कमरे मैं बैठा हूँ। एक वैसा ही दूसरा कमरा है, उसके और मेरे कमरे के बीच में, एक दरवाजा है जिसमें बहुत ही खूब सूरत गुलाबी मखमल का पर्दा ठीक नीचे तक लटक रहा है। ज्यों ही मैंने उस पर्दे की तरफ देखा तो वह मुझे ऐसे हिलते हुए दिखाई दिया मानो हवा के झोंके से हिला हो। इतने में दूसरे कमरे में से आवाज आई कि देख! इसे हिला मत, यह अलग हो जाएगा। मैंने जवाब दिया कि अगर जोर का, हवा का झोका आया तो अलग होकर फिर यथास्थिति में आ जाएगा। **उधर से आवाज आई इसके हटने का अर्थ समझते हो क्या?**

मैंने जवाब दिया कि मैंने अभी जो अर्थ बताया क्या उससे भी भिन्न कोई होता है? उधर से आवाज आई हाँ। इसके हटने का क्या अर्थ होता है देख! इतना कहने के साथ वह पर्दे वाला दृश्य तो गायब हो गया और क्या देखता हूँ, एक मनुष्य जिसका पर्दा हट चुका है, **त्रिकालदर्शी हो गया है।** इस प्रकार उसका मोह पूर्ण रूप से भंग हो चुका है। उसका अपने-पराये का भेद पूर्ण रूप से खत्म हो चुका है। **संसार के सभी प्राणियों को वह एक ही नजर से देखता है, न उसका किसी से मोह है और न ही द्वेष।** इसके तत्काल बाद फिर वही गुलाबी पर्दा दिखने लगता है और फिर उधर से आवाज आती है कि देखा यह होता है इस पर्दे के हटने का अर्थ। मैंने कहा यह तो बहुत ही अच्छी बात है, इसी के लिए तो यह सब कर रहा हूँ। उधर से आवाज आती है कि यह सब ठीक तो है, परन्तु एक **''योगभ्रष्ट''** शब्द होता है। वह क्या होता है? क्या उसके बारे में जानते हो? मैंने कहा **आराधना** के दौरान कोई बुरा काम हो जाता है, उससे आराधना का पतन हो जाता है, दूसरी तरफ से आवाज आती है कि होता तो कुछ ऐसा ही है, परन्तु इसकी सही परिभाषा यह नहीं है।

तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चे हैं, पत्नी है, माँ है, वे सभी पूर्ण रूप से तुम पर आश्रित हैं। यह ठीक है कि अगर तुमने इस पर्दे को हटा दिया तो तुम्हारी स्थिति

तो ठीक वैसी ही हो जायेगी, जैसी अभी तुमने देखी है, परन्तु इन प्राणियों को इसका ज्ञान, थोड़ा ही है। जब तुम इस जवानी में इनको छोड़ कर चल दोगे तो इनकी आत्मा की करुण पुकार और क्रन्दन तुमको ले डूबेगी। और इस प्रकार "योगभ्रष्ट" हो जाने के कारण तुम्हारा फिर पतन हो जायगा। अब आगे जैसा तुम ठीक समझो, वैसा करो।"

यह बात सुनकर मैं बहुत ही दुविधा में फँस गया। पूछा आराधना का भी ऐसा भंयकर परिणाम हो सकता है, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। दूसरी तरफ से आवाज आती है, **कर्मगति बहुत ही गहन है**, इसको कोई नहीं जान सकता। कुछ देर विचार के बाद जब मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया कि अब आगे क्या करना चाहिए तो मैंने उसी अदृश्य आवाज से पूछा, मैं तो कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूँ कि अब मुझे क्या करना चाहिए। अतः कृपया मेरा **पथ प्रदर्शन** करें, मैं वैसा ही करने को तैयार हूँ। इस प्रकार मेरे प्रार्थना करने पर दूसरे कमरे में से अवाज आती है कि जब यह हिल चुका है तो अपने निश्चित समय पर अपने आप हट जाएगा। **अब इसे हिलाना बन्द करके कर्म क्षेत्र में विचरण करते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करो**। इन शब्दों के साथ ही साथ दृश्य गायब हो गया और मेरी आँख खुल गई। **भोर** हो चुकी थी, अतः नित्यकर्म से निवृत्त हो कर, भगवान् श्री कृष्ण की तस्वीर को **'माला'** पहना कर छुट्टी ले ली। यह करीब सन् **1974** के अन्तिम समय की बात है।

इसके बाद 1983 तक मजदूर संगठनों और राजस्थान किसान यूनियन के विभिन्न पदों पर सक्रिय हो कर कार्य करता रहा। परन्तु जिस प्रकार से पूर्ण आस्था आध्यात्मिक जगत् के चमत्कारों से हो चुकी थी, ध्यान उस पर निरंतर ही लगा रहता था। भौतिक जगत् के अधिकतर काम आध्यात्मिक शक्तियों के पथ प्रदर्शन से करने का एक प्रकार से आदि हो गया था। यही कारण रहा कि बहुत कम असफलता मिली। जिस काम में हाथ डाला, सफल हुआ। सन् 1982 में एक प्रकार से स्पष्ट आदेश मिल चुका था कि अब मजदूर संगठन से अलग हो जाओ। परन्तु मैंने उसकी तरफ अधिक ध्यान नहीं दिया। इस प्रकार आदेश को न मानने के कारण मुझे भौतिक जीवन में भारी असफलतओं और निराशाओं का सामना करना पड़ा। जबकि पहले मैं जिस काम में हाथ डालता था, मेरा हर कार्य सफल होता था।

सौभाग्य से 1983 के मार्च-अप्रैल में संत सद्गुरुदेव (बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी) के चरण रज माथे पर लगाने का सौभाग्य मिला। इससे जीवन में एक प्रकार से नई चेतना पैदा होकर जीवन अधिक आनन्दमयी हो गया परन्तु मेरे जीवन में सुख का समय बहुत ही कम रहा है।

जून-जुलाई 1983 में भारी मानसिक उद्विग्नता का सामना करना पड़ा। जामसर जाने के आध्यात्मिक संकेत निरन्तर होते रहे, परन्तु मैं इन्हें दुर्भाग्यवश समझ नहीं सका। **इस प्रकार 23 अगस्त 1983 को मेरे कार्य से अकारण ही अलग हो गया।** अकारण ही घर पर बैठा रहा, परन्तु गुरुदेव की शरण में फिर भी नहीं जा सका।

दुर्भाग्य से 31.12.1983 की काल रात्रि में वह (बाबाजी) भौतिक रूप से, संसार को

छोड़कर चले गये। प्रथम भण्डारे की व्यवस्था के लिए सुजानदेसर निवासी बाबा राम नाथ जी जामसर जाते समय बीकानेर स्टेशन के सामने मिले। उनसे बाबा जी के स्वर्गवास की खबर सुनकर तो जमीन ही पैरों के नीचे से खिसकती नजर आई। बाबा राम नाथ जी ने भण्डारे में चलने के लिए काफी आग्रह किया, परन्तु भारी मन से उनसे क्षमा माँग कर, गंगाशहर चला गया। मेरे **भौतिक पिता** का सहारा भी तीन वर्ष की अल्प आयु में ही छीन लिया गया और **आध्यात्मिक पिता** भी इसी प्रकार चन्द दिनों में ही ईश्वर के सहारे छोड़ कर चले गये। इस प्रकार भौतिक जीवन की तरह आगे का आध्यात्मिक जीवन भी मुझे संघर्षों में ही बिताने को मजबूर कर दिया गया।

भौतिक जीवन का सम्बन्ध तो केवल **जीविकोपार्जन** तक का ही बहुत सीमित दायरे का था, उसमें भी भंयकर संकटों से गुजरना पड़ा। सुख नाम की वस्तु का आभास तक कभी नहीं हुआ।

इस आध्यात्मिक जीवन का क्षेत्र तो सारे विश्व का मैदान है। भौतिक जीवन की तरह ही इस जीवन में भी विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करना ही पड़ा, यह स्पष्ट नजर आ रहा है। "**केवल ईश्वर के सहारे नितान्त अकेले इस पूरे संसार के मैदान में बिलकुल विपरीत और विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने के लिए झोंक दिया गया हूँ।**" अर्जुन की तरह सभी रास्ते अवरुद्ध कर दिये गये हैं। मात्र एक ही संघर्ष का रास्ता खुला छोड़ा गया है, **मुझे अकेले ही संसार भर की इस आसुरी वृत्तियों से जूझना पड़ेगा**, यह देख कर कभी-कभी भारी निराशा का अनुभव करता हूँ। परन्तु जब पीछे के जीवन पर नजर डालता हूँ कि किस प्रकार नितान्त अकेला ही विपरीत विषम परिस्थितियों को परास्त करता हुआ यहाँ तक आ पहुँचा हूँ तो कुछ हिम्मत बन्धती है।

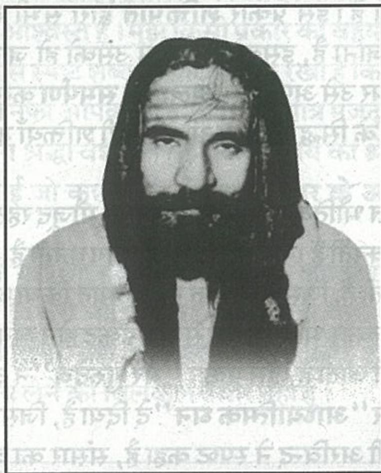
इसके अलावा दूसरा सहारा उस अदृश्य असीम सत्ता का है, जिसने पहले ही मेरे जीवन के अन्तिम सांस तक के पूरे जीवन के दृश्य, टुकड़ों में सिनेमा के ट्रेलर की तरह दिखा रखे हैं। और आज भी वह पूर्ण सत्ता पग-पग पर मेरा पथ प्रदर्शन कर रही है। "**मुझे प्रमाण सहित यह बता दिया गया है कि जो कुछ करना है वह पूर्व निर्धारित व्यवस्था है, उसमें रत्ति भर की हेरा फेरी भी सम्भव नहीं।**" मुझे विषम परिस्थितियों में झोंक कर आध्यात्मिक आराधनाएँ करवा कर, कितनी शक्ति अर्जित करवा दी, उसका भी मैं हिसाब लगाने में असमर्थ था कि "**गुरुदेव अनायास ही इतनी अपार आध्यात्मिक सम्पति विरासत में दे गये**", उसका अनुमान लगाना ही मेरे लिए संभव नहीं।

मैं स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष महसूस कर रहा हूँ कि मैं तो मात्र एक कठपुतली हूँ, जिसे असीम सत्ता अपनी इच्छा के अनुसार नचा रही है। "**मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि मैं इस भव सागर के आखिरी किनारे पहुँच चुका हूँ।**" उस दयालु **सर्व शक्तिमान** ने झुक कर मेरा दाहिना हाथ अपने दाहिने हाथ में मजबूती से थाम लिया है। ऐसी स्थिति में थोड़ा सा प्रयास करने पर ही, मैं इस भव सागर से बाहर निकल जाऊँगा। मुझे स्पष्ट समझा दिया गया है कि इसके लिए मेरा प्रयास नितान्त आवश्यक है, उसके बिना कार्य पूरा होना सम्भव नहीं है।

कुछ इसी प्रकार के दिशा-निर्देशों और आदेशों के सहारे अकेला ही चल पड़ा हूँ।

मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि **"किन घाटियों, दर्रों और भयंकर से भंयकर जंगलों और रेगिस्तानों को पार करता हुआ कैसे, मैं उस सबसे उच्च शिखर पर पहुँचूँगा?"** संसार के लोग इस समय उस पूर्ण सत्ता के बारे में बहुत थोड़ा ज्ञान रखते हैं, परन्तु पिछले कुछ समय से इन प्रयासों में अभूतपूर्व तेजी आई है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि उस परम सत्ता का अवतरण हो चुका हैं और तय क्रमिक विकास के साथ अपना प्रकाश तेजी से संसार में फैला रही है। **जैसे सूर्योदय का समय नजदीक आता जाता है, तारों का प्रकाश क्षीण होता जाता है।** तारे अपनी सत्ता की इस गिरती हुई स्थिति को बिलकुल पसन्द नहीं करते हैं, परन्तु उसके बावजूद इन सभी तारों के विरोध के, **सूर्योदय का समय नहीं घटता।** इस प्रकार ज्यों ही वह उदय होता है, सभी तारों की सत्ता उनके यथास्थिति बने रहने पर ही लोप हो जाती है, संसार की आज ठीक वही स्थिति है

विभिन्न मत-मतान्तरों और धर्मों के धर्म गुरुओं को यह स्थिति स्वीकार्य नहीं है, परन्तु तारों की तरह उनका भी कोई वश नहीं चलेगा।



सभी पूर्ण असहाय होकर ताकते रह जाएँगे। महर्षि अरविन्द ने इसे स्पष्ट देख लिया था। अतः उन्होंने उस शक्ति के अवतरण की स्पष्ट घोषणा कर दी थी। मैं स्पष्ट महसूस कर रहा हूँ, जब मैं प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार की बात करता हूँ तो संसार के लोग अविश्वास के साथ प्रश्न वाचक दृष्टि से मेरी तरफ देखने लगते हैं। उन्हें मेरी बात का बिलकुल भी विश्वास नहीं होता।

जब मैं **'नाम खुमारी'** और **'नाम अमल'** की बात करता हूँ तो उनको बिलकुल ही विश्वास नहीं होता। **प्रत्यक्षानुभूति** और **साक्षात्कार** की बात हमारे सभी ऋषि कह गये हैं, जिसे पिछली सदी में स्वामी विवेकानन्द जी ने संसार के सामने दोहराया है। नाम खुमारी और नाम अमल के बारे में स्पष्ट रूप से संत सद्गुरु नानक देव जी तथा कबीर साहब खुलासा कर गये हैं। परन्तु तामसिक शक्तियों का एक छत्र साम्राज्य होने के कारण, इस युग का मानव इसे समझने में असमर्थ है। इसमें इस युग का मानव दोषी नहीं है, यह तो इस युग का **गुणधर्म** है।

अगर संसार की ऐसी स्थिति नहीं होती तो उस परम सत्ता का अवतरण सम्भव नहीं होता। जब मैं **सूक्ष्म शरीर** और **कारण शरीर** तथा **आत्मा** की बात करता हूँ और उसकी **प्रत्यक्षानुभूति** और **साक्षात्कार** को सम्भव बताता हूँ तो इस युग के लोग **हतप्रभ** मेरी तरफ ताकने लगते हैं।

इस प्रकार मैं देखता हूँ कि अगर मैं माया के लोकों के परे के **सत् लोक, अलख लोक और अगम लोक की बात करनी प्रारम्भ कर दी तो इस युग का मानव पूर्ण रूप से विद्रोह कर देगा।** जब माया के क्षेत्र में रहते हुए होने वाली अनुभूतियों का, इस युग के मानव को ज्ञान होना असम्भव लगता है तो मायातीत लोकों की तो बात पूर्ण रूप से काल्पनिक और असत्य मानेगा। मुझे उपर्युक्त आध्यात्मिक जगत् के विभिन्न लोकों की जानकारी और प्रत्यक्षानुभूति काफी समय से हो रही है।

इस प्रकार की सभी अनुभूतियाँ भौतिक जगत् में भी सत्यापित होती रही हैं। परन्तु मैं दूसरों को यह अनुभूति करवाने की स्थिति में नहीं था। गुरुदेव के स्वर्गवास के बाद, जब मेरे से संबंधित लोगों को ये सभी अनुभूतियाँ होने लगी तो मुझे बहुत आश्चर्य होने लगा। क्योंकि मैं हिन्दू धर्म के दार्शनिक पक्ष से, पहले से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ था, इसलिए मैं इसे बिलकुल नहीं समझ सका।

दर्शन शास्त्र के कई लोगों से सम्पर्क करने पर पता लगा कि जब सच्चा आध्यात्मिक संत अपने अन्तिम समय के निकट पहुँच जाता है तो उसे **दिव्य दृष्टि** प्राप्त हो जाने के कारण वह **त्रिकाल दर्शी** हो जाता है। इस प्रकार **शक्तिपात** द्वारा सभी **आध्यात्मिक शक्तियाँ** किस व्यक्ति को सौंप कर जाना है, इसका पूर्ण ज्ञान उसको हो जाता है। अतः वह अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर उसे अपने पास बुला कर **समर्पण** करवाता है, और इस प्रकार **समर्पण** के समय शक्तिपात के सिद्धान्त द्वारा अपनी सारी शक्तियाँ उस व्यक्ति में प्रविष्ट कर देता है।

परन्तु जब तक वह संत भौतिक रूप से इस संसार में मौजूद रहता है, सारी शक्तियाँ मूल रूप से उसी के अधीन कार्य करती हैं। ज्यों ही वह शरीर त्याग करता है, सारी शक्तियाँ उस व्यक्ति में पूर्ण रूप से प्रविष्ट कर जाती हैं, जिसमें उस संत ने शक्तिपात किया था। इस प्रकार उस व्यक्ति के द्वारा उन शक्तियों का चमत्कार भौतिक रूप से जब प्रकट होने लगता है तो धीरे-धीरे सारी स्थिति उसके समझ में आती जाती है। इस प्रकार **''मेरे गुरुदेव''** ने अनायास ही कृपा करके विरासत में मुझे इतना अपार **''आध्यात्मिक धन''** दे दिया है, जिसका पूर्ण ज्ञान मुझे आज की स्थिति में तो नहीं है। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है, संसार का कोई भी कार्य कमोवेश **''अध्यात्म शक्ति''** से परिपूर्ण है।

इस युग के तथाकथित अध्यात्मवादियों ने भौतिक जगत् और आध्यात्मिक जगत् को दो भागों में विभक्त करके बीच में जो कृत्रिम लक्ष्मण रेखा खींच दी है, वही आध्यात्मिक ज्ञान के लोप होने का मुख्य कारण है। श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है, **''जब भौतिक सत्ता, आध्यात्मिक सत्ता की अधीनता स्वीकार करके उसके आदेशों का पालन प्रारम्भ कर देगी, उसी दिन धरा पर स्वर्ग उतर आएगा।''**

एक साल के कारावास के काल में श्री अरविन्द को जो अनुभूतियाँ हुई, उनका वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि ''भगवान् ने मुझे स्पष्ट बता दिया है कि जो लोग आजादी के लिए संघर्ष कर रहे हैं, उनमें मेरी शक्ति काम कर रही है और जो लोग विरोध कर रहे हैं, वे भी मेरी

शक्ति के आदेश से ही कार्यरत हैं। इस प्रकार सारा संसार मेरी ही शक्ति के कारण क्रियाशील है। मेरी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता।" इस प्रकार हम देखते हैं कि संसार के सभी प्राणी कठपुतली मात्र हैं जैसे-जैसे परम सत्ता नचाती है, नाचना पड़ता है। इस प्रकार मुझे अच्छी तरह समझा दिया गया है। **जो कुछ होना है वह पूर्व नियोजित है, उन्हीं अनुभूतियों के आधार पर, मैं हर क्षेत्र में भौतिक साधनों की कुछ भी परवाह किये बिना निकल पड़ता हूँ।**

आज तक की प्रत्यक्षानुभूतियों ने मुझे पूर्ण रूप से आश्वस्त कर दिया है। भौतिक साधनों के अभाव में कोई भी कार्य नहीं रुक सकता। प्रारम्भ से लेकर आज तक की मेरी वस्तु स्थिति पर, जब मैं एक साथ नजर डालता हूँ तो पाता हूँ कि मेरे माध्यम से जो सत्ता अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रही है, उसमें मेरी बुद्धि और मेरी किसी भी शक्ति के सहयोग का रत्ति भर भी योगदान नहीं रहा है।

मेरे न चाहते हुए भी वह परम सत्ता मुझे अपनी मर्जी से नचा रही है। इसी कारण जो कुछ भी मेरे माध्यम से करवाया जा रहा है, इसलिए मेरे अन्दर **कर्ता भाव** बिल्कुल नहीं है। इस सम्बन्ध में, मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त हूँ। मुझे किसी प्रकार का **वहम** (भ्रम) नहीं है।

मैंने, **गुरुदेव-ईश्वर** से स्पष्ट शब्दों में **प्रार्थना** कर रखी है कि मैं हर प्रकार से नाचने को तैयार हूँ, परन्तु उसमें घाटा नफा आपका ही होगा। मैं तो मात्र मजदूरी का ही अधिकारी हूँ।

मुझ से संबंधित लोग श्रद्धा वश जब मुझे किसी कार्य का **श्रेय** देते हैं तो मैं उन्हें स्पष्ट रूप से कह देता हूँ कि भाई जो कुछ हो रहा है, **वह ईश्वर के आदेश और गुरु कृपा के कारण हो रहा है।**

मैं तो मात्र आप लोगों की तरह साधारण प्राणी हूँ, जो कुछ हो रहा है, उसका श्रेय लेने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। **मेरी महत्त्वाकांक्षाएँ तो मुझे कुछ और ही करने को प्रेरित करती हैं, परन्तु परिस्थितियों वश मुझे करना कुछ और ही पड़ रहा है।**

अतः मैं यह झूठा श्रेय लेने को बिलकुल तैयार नहीं हूँ।



'गुरु' सर्वव्यापक

हमारे विज्ञान में Time And Space (समय और जगह) की कोई Value (मूल्य) नहीं है। आप मेरे में हो और मैं आप में हूँ। आप जहाँ याद करोगे, मैं वहाँ Present (उपस्थित) रहूँगा। "गुरु", अगर वास्तव में 'गुरु' है तो Omnipresent (सर्वव्यापक) है।



समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग



आराधना का जवाब क्यों नहीं मिलता?

– समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संसार में हर कार्य का फल मिलता है। हम कोई भी कार्य करें, उसका परिणाम अवश्य होगा। परिणाम हमारी इच्छा के अनुसार मिलना कोई जरूरी नहीं, परन्तु कोई भी कार्य निरर्थक नहीं होता। हम जो कुछ भी करते हैं। दूसरी तरफ से प्रत्युत्तर अवश्य मिलता है, वह सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, परन्तु निरूतर नहीं रहता। परन्तु हम देखते है आध्यात्मिक आराधना का हमें कोई उत्तर नहीं मिल रहा है। हम काल्पनिक विश्वास से चाहे अपने आप कुछ भी मान लें, परन्तु प्रत्युत्तर जैसी बात नहीं होती।

भौतिक जगत् में हम किसी की सेवा करते हैं तो उसके बदले हमें कुछ न कुछ मिलता है। जो कुछ मिलता है उसकी प्रत्यक्षानुभूति होती है और देने वाले की भी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार होता है। जो कुछ भी हम खाते पीते है, उस वस्तु के गुण धर्म के अनुसार हमें स्वाद और आनन्द मिलता है और वह वस्तु अपना प्रत्यक्ष प्रभाव भी दिखाती है। परन्तु आध्यात्मिक जगत् में यह सिद्धान्त पूर्णरूप से असफल क्यों हो रहा है? इस इकतरफा कार्य को करते-करते संसार के लोग निराश हो चुके हैं।

धर्म गुरु अशिक्षित और भोले भाले लोगों को तर्क के आधार पर निरूतर करके अन्धविश्वास के सहारे चलने को मजबूर कर देते हैं। परन्तु बुद्धिजीवी और युवावर्ग बिना परिणाम के उनके आदेश को मानने को तैयार नहीं है। हमें इस पर निष्पक्ष होकर विचार करना ही पड़ेगा। यह मानव समाज में एक ऐसी भयंकर बीमारी फैल चुकी है, जिसने संसार के लोगों से सुख शान्ति छीन ली है। **इस समय संसार में प्रकट शक्ति को अगर पूर्ण रूप से सृजन में लगा दिया जाय तो पृथ्वी पर स्वर्ग उतर सकता है। हम देखते है संसार की पूर्ण व्यक्त शक्ति का करीब 75 प्रतिशत भाग संहार और विध्वंस के लिए खर्च किया जा रहा है। हर व्यक्ति चालाकी और होशियारी के द्वारा औरों का शोषण और दमन करके सुखी बनने के प्रयास के बावजूद दुःखी और अशान्त निरन्तर होता जा रहा है।**

यही स्थिति संसार के सभी राष्ट्रों की है। सारे संसार में आज जितना अन्धकार व्याप्त हुआ है पहले कभी नहीं था। हम देख रहे हैं कि इस समय तो धर्म की आड़

में भी संसार के मानव का भारी शोषण होने लगा है। पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक का भय दिखाकर जितना शोषण संसार के सभी धर्मों में इस समय हो रहा है, पहले कभी नहीं हुआ। संसार में इस समय जितनी भी आराधना पद्धतियाँ प्रचलित हैं, वे प्रायः सभी **बहिर्मुखी** हैं। इसके अलावा निर्जीव वस्तुओं के माध्यम से सभी धर्म गुरु आराधना करवा रहे हैं।

कोई भी भौतिक निर्जीव वस्तु स्वयं मनुष्य का भला बुरा करने की स्थिति में नहीं होती। ऐसी स्थिति में प्रत्युत्तर मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता। **हमारे सभी ऋषि कह गये हैं उस परम सत्ता का निवास अपने शरीर के भीतर ही है।** हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ भी यही बात कहते हैं। अतः **अन्तर्मुखी आराधना** के बिना काम बन नहीं सकता। यह आराधना भी कोई आसान कार्य नहीं है। वह परम सत्ता ऐसे भयंकर चक्रव्यूह को पार करने पर मिलती है जिसे पार करना अकेले जीव के लिए बहुत कठिन है। इस रास्ते पर चलने के लिए किसी भेदी संत सत्गुरु की आवश्यकता होती है। भगवान् राम और कृष्ण को भी गुरु धारण करना पड़ा था। इसके अलावा सभी संत, गुरु की महिमा का गुणगान कर गये हैं। **अगम लोक का भेद और रास्ता, केवल गुरु कृपा से ही प्राप्त हो सकता है और कोई रास्ता नहीं।**

संत कबीर ने कहा है:- "कबीरा धारा अगम की सद्गुरु दई लखाय, उलट ताहि पढ़िये सदा स्वामी संग लगाय।" (राधाकृष्ण) कबीर ने तो यहाँ तक कह दिया "गुरु गोविन्द दोनों खड़े किसके लागूँ पांव, बलिहारी गुरुदेव की गोविन्द दियो मिलाय"। संतों ने उस परम सत्ता का स्थान स्पष्ट करते हुए कहा है:-

ज्यों नैनन में पूतली,त्यों खालिक घट माहिं।
मूरख लोग न जानहीं,बाहर ढूंढन जाहिं।।
ज्यों तिल माहीं तेल है,ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझ में,जाग सके तो जाग।।
पुष्प मध्य ज्यों वास है,व्याप रहा सब माहिं।
संतों माहीं पाइये,और कहूँ कुछ नाहिं।।

चेतन गुरु की वाणी में जो प्रभाव और शक्ति होती है, वह छिपी नहीं रह सकती। वही बात एक कथावाचक या उपदेशक बहुत ही अच्छे ढंग से कह सकता है वह बहुत कर्णप्रिय लगेगी, परन्तु उपदेश समाप्त होने के बाद उसका कुछ भी प्रभाव आप पर नहीं बचेगा।

उस बात से, आप में कोई परिवर्तन नहीं आएगा। परन्तु वही बात **'चेतन गुरु'** द्वारा कही जाने पर इतनी प्रभावशाली और गहरी पैठ कर जाती है कि आप जीवन भर उसे भूल नहीं सकते । वह अपके जीवन में जबरदस्त परिवर्तन कर देगी।

एक बार जिज्ञासु बनकर ऐसी सत्संग में चले गये तो फिर बार-बार जाने की इच्छा होगी, जिसे आप रोक नहीं सकेंगे। इस प्रकार आपका जीवन परिवर्तित हो जायेगा, **आप द्विज बन जायेंगे**। और अगर साधारण व्यक्ति जो अच्छा कथावाचक या उपदेशक हो उसका उपदेश जीवन भर असंख्य बार आप सुनें तो भी आपके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आवेगा। *इस सम्बन्ध में कनाडा के टोरन्टो चर्च के पादरी डा. ओ. जे.स्मिथ ने एक जगह लिखा है:-* **"जब मनुष्य पवित्र आत्मा की शक्ति में से होकर आया हुआ वचन सुनता है तो वातावरण में एक विचित्र रहस्यपूर्ण शक्ति, उपस्थित लोगों को प्रभावित करती है। और जब मनुष्य शारीरिक और दिमागी शक्ति द्वारा दिया हुआ वचन सुनता है तो वह रहस्यपूर्ण विचित्र वातावरण तथा प्रभाव अनुपस्थित रहता है। यदि आप वास्तव में आत्मिक जन है, तो इन दोनों के अन्तर को पहचान सकते है"**। धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों आराधना गहरी होती जायेगी, प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार स्पष्ट होते जायेंगे। इस प्रकार जीव का विश्वास निरन्तर अपनी ही अनुभूतियों के कारण पक्का होता चला जायेगा। ऐसी स्थिति में मनुष्य को प्रार्थाना का सही उत्तर मिलना प्रारम्भ हो जायेगा। ज्यों-ज्यों रास्ता कटता जायेगा आराधना में आनन्द बढ़ता जायेगा। इस प्रकार जीव एक ही जन्म में परमानन्द की स्थिति में पहुँच जाता है। क्योंकि तामसिक वृतियाँ ऐसे जीव के पास से ही नहीं गुजर सकती है, अतः ऐसे जीव से सम्पर्क करने वाले लोगों में भी उस सात्विक शक्ति की लहर दौड़ने लगेगी।

इस प्रकार **प्रथम आत्म जागृति ही कठिन है**। जिस प्रकार एक दीपक के प्रज्वलित होने पर दीपों से दीप जलाने में कोई देर नहीं लगती। इसी प्रकार एक जलता दीपक असंख्य दीपक जला कर संसार का अन्धेरा खत्म कर सकता है। **एक चेतन गुरु ही संसार के लिए पर्याप्त है।**

"ईश्वर के धाम का रास्ता,
मनुष्य शरीर में से होकर ही जाता है।"

-सद्गुरुदेव सियाग



श्री कृष्ण की सिद्धि



गुरुदेव बाल्यकाल से ही आर्थिक तंगी से गुजर रहे थे। लेकिन अब गुरुदेव के आध्यात्मिक जीवन में भी कई समस्याएँ आने लगी। उनको ध्यान में भगवान् श्री कृष्ण की आराधना करने का आदेश मिला। उसके बाद गुरुदेव ने श्री कृष्ण की आराधना शुरू की। गुरुदेव बहुत ही गरीबी के दौर से गुजर रहे थे। पिताजी, उनको ढ़ाई साल की उम्र में ही छोड़, स्वर्ग सिधार गये। संत शिरोमणी शक्तिमयी माँ ने मेहनत-मजदूरी करके गुरुदेव को पढ़ाया लिखाया। गुरुदेव रेलवे में कनिष्ठ लिपिक के पद पर कार्यरत थे। लेकिन आर्थिक तंगी ज्यों की त्यों बनी हुई थी। गुरुदेव ने भौतिक समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए श्रीकृष्ण से प्रार्थना की।



कुछ समय बाद उनको **बद्रीनाथ** जाने की इच्छा हुई। **बद्रीधाम** जाकर गुरुदेव ने भगवान् से प्रार्थना की तो ध्यानावस्था में बद्रीनाथ जी ने कहा कि मेरे पास जो कुछ है, वह, तो मैं मोहनलाल (श्री कृष्ण) से लाया हूँ। अतः आप मथुरा जाओ। गुरुदेव ने जब मथुरा जाकर करूण प्रार्थना की तो भगवान् श्री कृष्ण ने कहा कि यहाँ तो मैं **'ग्वाला'** था, आप द्वारिका जाओ, वहाँ पर मैं राजा (**द्वारिकाधीश**) था। वहाँ से जो आप माँगोगे वही मिल जाएगा। गुरुदेव ने कहा ! कि **"देना है तो दे दे, फालतू के बहाने क्यों बनाता है"**

इसके बाद गुरुदेव ने देखा कि श्रीकृष्ण बंशी बजाते हुए पास में आ गए तथा गुरुदेव से कहा कि आप भी बंशी बजाओ। गुरुदेव ने कहा कि मुझे बंशी बजानी नहीं आती है। इस पर श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं आपको बंशी बजानी सिखा दूँगा, ऐसे कहते हुए बंशी गुरुदेव के हाथ में रख दी तथा भगवान् श्री कृष्ण अदृश्य हो गए।

इसके बाद गुरुदेव कई बार द्वारिका जाकर आए। यात्रा के प्रत्येक दौर में भगवान् श्री कृष्ण, दर्शन देते तथा कहते कि तेरी आराधना के पूर्ण होने पर जो तू माँगेगा, वहीं तुझे मिलेगा।

सन् 1984 में द्वारिका की अंतिम यात्रा पर श्रीकृष्ण ने गुरुदेव को दर्शन दिये तथा कहा कि आज मेरी सारी दिव्य शक्ति, मैं आपको देता हूँ। अब यहाँ मेरे पास वापस आने की व मेरे से माँगने की जरूरत नहीं है तथा जब आपकी कुंडलिनी के तुला राशि का चन्द्रमा उच्च राशि में आएगा, तब मैं आपको धन और सारे भौतिक सुखों का लाभ स्वतः ही दे दूँगा। गुरुदेव कहते हैं कि श्री कृष्ण के दर्शन के बाद मुझे **श्री कृष्ण की सिद्धि हो गई।**

एक दिन ध्यान में दिखा कि गुरुदेव एक अद्भुत सागर के किनारे पहुँच गए हैं। पुराणों में सुमेरू पर्वत का वर्णन आता है, वैसा ही पहाड़ एक नाव के पास दिखाई दिया। गुरुदेव ने देखा कि एक नाव, सुमेरू पर्वत से, डोरी से बँधी हुई, पास आती हुई दिखाई दी। उस नाव के अंदर एक नव-दस मास का अति सुंदर बालक सोया हुआ दिखाई दिया। उनका चेहरा इतना सुंदर, अद्भुत और प्रकाशमय था कि आँखें भी चकरा गईं। जब गुरुदेव ने ध्यान से देखा तो बालक रूप में श्री कृष्ण सोये हुए दिखाई दिये। बालक रूपी श्रीकृष्ण ने गुरुदेव के पास आकर कटाक्ष रूप में कहा कि मैं पृथ्वीलोक पर श्री कृष्ण रूप में रहता हूँ परन्तु दिव्य-लोक में , मैं इसी बालक रूप में रहता हूँ। भगवान् ने कहा कि मेरे दर्शन के बाद आपको सिद्धयोग का सम्पूर्ण लाभ मिल गया है, अब आपको कहीं भी जाने की जरूरत नहीं हैं इसके बाद श्रीकृष्ण के दर्शन पूरे हुए। गुरुदेव कहते हैं कि श्री कृष्ण की शक्ति, हर समय मेरे साथ रहती है तथा हर कार्य को बखूबी पूरा करती हैं।

सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा

21 वीं सदी में सनातन धर्म ही विश्व धर्म होगा। मेरी यह बात विश्व के लोगों को आश्चर्य चकित कर सकती है। परन्तु संपूर्ण विश्व के भविष्यदृष्टाओं ने स्पष्ट शब्दों में, एक ही स्वर में इस क्रांतिकारी परिवर्तन की भविष्यवाणी कर रखी है। यह कार्य मात्र वैदिक दर्शन के *''सर्वं खल्विदं ब्रह्म''* के सनातन दर्शन को आधार मानकर ही संभव है।

वैदिक मनोविज्ञान के अनुसार जिन सात तत्त्वों (कोशों) से मनुष्य शरीर की संरचना की बात कही गई है, उनमें से प्रथम चार-*अन्न*(Matter), *प्राण*(Life), *मन* (Mind) एवं *विज्ञान* (Supermind) मानवता में चेतन हो चुके हैं। जब यह चार कोश चेतन हो सकते हैं तो बाकी तीन कोश आनंद (Bliss), चित्त (Becoming) और सत् (Being) (अर्थात् सत् +चित्+ आनंद- सच्चिदानंद) क्यों नहीं चेतन हो सकते ?

क्योंकि विश्व में एक मात्र वैदिक धर्म ही है, जो स्पष्ट शब्दों में घोषणा करता है कि **'ईश्वर'** प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है। बाकी किसी भी धर्म में यह सामर्थ्य नहीं है। अतः वैदिक दर्शन के बाकी तीनों कोशों का विकास मात्र सनातन धर्म ही कर सकता है। मानवता में सातों कोशों के विकास को ही ध्यान में रखकर महर्षि श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है कि 'आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी।'

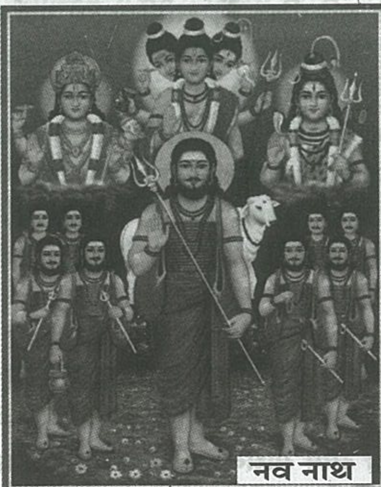
-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

सिद्धयोग का परिचय

योग क्या है ? विस्तृत वैदिक (हिन्दू) साहित्य का वह समस्त ज्ञान जो भारतीय आध्यात्मिकता से संबंधित है, योग उसका सम्पूर्ण भाग समझा जाता है। **'पातंजलि योगसूत्र' जिसमें 195 सूत्र हैं,** उनमें अष्टांग योग की आठ अवस्थाओं के बारे में स्पष्ट रूप से समझाकर लिखा गया है कि साधक एक एक तत्त्व को जीतता हुआ अपने असली स्वरूप में बदल जाता है।

प्राचीन काल में इन अवस्थाओं से गुजरने के लिए साधक को हठयोग का सहारा लेना पड़ता था लेकिन **सिद्धयोग में सद्गुरु कृपा से, चेतन शक्ति कुण्डलिनी के नियंत्रण में सारे नियम विधानों का पालन सहज में ही हो जाता है।** योग, दिव्य के साथ मिलन है अर्थात् आत्मा का परमात्मा (सार्वलौकिक चेतना शक्ति) से मिलन या योग सूत्र में लिखा है कि चित् की वृत्तियों का निरोध ही योग है। भारतीय योग दर्शन में वर्णित "**योग**" का मूल उद्देश्य "**मोक्ष**" है। आज संसार में भारतीय योग के नाम से जो शारीरिक कसरतें करवाई जा रही है, उसका भारतीय योगदर्शन में वर्णित योग से कोई सम्बन्ध नहीं है। **"भारतीय योग तो वेद रूपी कल्पतरू का अमर-फल है।" यह योग साधक के त्रिविध तापों (आदि-भौतिक, आदि-दैहिक व आदि-दैविक) का शमन (नाश) कर देता है।** जब तक साधक इन त्रिविध तापों (सम्पूर्ण रोगों) से पूर्ण मुक्त नहीं हो जाता है तब तक समाधिस्थ नहीं हो सकता और समाधिस्थ हुए बिना, परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार असम्भव है। **यह ज्ञान सद्गुरु की कृपा के बिना प्राप्त नहीं हो सकता।** इस सम्बन्ध में *वराहोपनिशद्* के दूसरे अध्याय में कहा है-



नव नाथ

दुर्लभो विषयत्यागो दुर्लभं तत्त्वदर्शनम्।
दुर्लभो सहजावस्था सद्गुरोः करुणां बिना।। 77।।

सद्गुरु की दया के बिना विषय-त्याग दुर्लभ है, तत्त्व दर्शन दुर्लभ है और सहजावस्था भी दुर्लभ है।

सिद्धयोग का दर्शन

सिद्धयोग, योग के दर्शन पर आधारित है जो कई हजार वर्ष पूर्व प्राचीन ऋषि मत्स्येन्द्रनाथ जी ने प्रतिपादित किया तथा एक अन्य ऋषि पातंजलि ने इसे लिपिबद्ध कर नियम बनाये जो **'योगसूत्र'** के नाम से जाने जाते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार मत्स्येन्द्रनाथ जी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने इस योग को हिमालय में कैलाश पर्वत पर निवास करने वाले शाश्वत सर्वोच्च चेतना के साकार रूप भगवान् शिव से सीखा था। ऋषि को, इस ज्ञान को मानवता के मोक्ष हेतु प्रदान करने के लिए कहा गया था। ज्ञान तथा विद्वत्ता से युक्त यह योग, **गुरु शिष्य परम्परा में समय-समय पर दिया जाता रहा है।**

सिद्धयोग क्या है ?

यह योग (सिद्धयोग) नाथमत के योगियों की देन है, इसमें सभी प्रकार के योग जैसे **भक्तियोग, कर्मयोग, राजयोग, क्रियायोग, ज्ञानयोग, लययोग, भावयोग, हठयोग आदि सम्मिलित हैं**, इसीलिए इसे पूर्ण योग या महायोग भी कहते हैं। इससे साधक के त्रिविध ताप आदि दैहिक (Physical) आदि भौतिक (Mental) आदि दैविक Spiritual) शांत हो जाते हैं तथा साधक जीवनमुक्त हो जाता है। महर्षि श्री अरविन्द ने इसे **पार्थिव अमरत्त्व** (Terrestrial Immoratality) की संज्ञा दी है। पातंजलि योगदर्शन में साधनापाद के 21 वें श्लोक में योग के आठ अंगों- **यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि का वर्णन है।** बौद्धिक प्रयास से इस युग में उनका पालन करना असम्भव है।

इसलिये इतने महत्त्वपूर्ण दर्शन के बारे में नगण्य लोगों को ही जानकारी है। सद्गुरुदेव साधक की शक्ति (कुण्डलिनी) को चेतन करते हैं। वह जाग्रत कुण्डलिनी साधक को उपर्युक्त अष्टांगयोग की सभी साधनाएँ स्वयं अपने अधीन करवाती है। इस प्रकार जो योग होता है उसमें साधक का सहयोग या असहयोग कोई काम नहीं करता है। **कुण्डलिनी के नियंत्रण में सारी क्रियाएँ स्वतः ही होती है इसलिए इसे सिद्धयोग कहते हैं।** जबकि अन्य सभी प्रकार के योग मानवीय प्रयास से होते हैं।

गुरु-शिष्य परम्परा में शक्तिपात-दीक्षा से कुण्डलिनी जाग्रत करने का सिद्धांत है। यह शक्तिपात केवल समर्थ सद्गुरु की कृपा द्वारा ही प्राप्त होता है।

सिद्धयोग के लाभ

मनुष्य में होने वाली बीमारियों को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने दो श्रेणियों में बाँटा है (1) **शारीरिक तथा (2) मानसिक**। भारतीय योगियों ने पाया कि शारीरिक तथा मानसिक बीमारियों के अलावा **आध्यात्मिक बीमारियाँ भी होती हैं।** दूसरे शब्दों में, कर्म का आध्यात्मिक नियम, पूर्व जन्म के कर्म इस जन्म की

बीमारियों तथा दुःखों के कारण हैं, जो मनुष्य को जन्म-जन्मान्तर तक कभी समाप्त न होने वाले चक्र में बाँधे रखते हैं। **सिर्फ रोगों को दूर करने के उद्देश्य से, इसे काम लेना इसके मुख्य उद्देश्य को ही छोड़ देना है, क्योंकि यह तो साधक को उसके कर्मों के, उन बन्धनों से मुक्त करता है जो निरन्तर चलने वाले जन्म-मृत्यु के चक्र में उसे बाँधकर रखते हैं।**

योग दर्शन मानव शरीर तथा लौकिक अतिमानस के बीच अति सूक्ष्म सम्बन्ध को मान्यता देता है, जो शरीर विशेष की रचना के लिए उत्तरदायी है।

पतंजलि ऋषि ने अपनी पुस्तक **'योग सूत्र'** में बीमारियों का वर्गीकरण तीन श्रेणियों में किया है **1. शारीरिक (आदि दैहिक), 2. मानसिक (आदि भौतिक) तथा 3. आध्यात्मिक (आदि दैविक)।**

मनुष्य की आध्यात्मिक बीमारियों के लिए आध्यात्मिक इलाज की आवश्यकता होती है। मनुष्य की आध्यात्मिक बीमारियों का आध्यात्मिक इलाज, योग के नियमित अभ्यास द्वारा केवल आध्यात्मिक गुरु जैसे गुरुदेव सियाग की मदद द्वारा ही सम्भव हो सकता है।

एक मात्र गुरु ही है जो शिष्य को उसके पूर्व जन्मों के कर्म बन्धनों को काटकर उसे, जीवन के सही उद्देश्य, आत्मसाक्षात्कार द्वारा बीमारियों तथा दुःखों से छुटकारा दिलाने में उसकी सहायता कर सकते हैं।

गुरुदेव सियाग ने अनेक मामलों में यह सिद्ध किया है कि सिद्धयोग का नियमित अभ्यास, लम्बे सत्र से चली आ रही बीमारियों जैसे गठिया, डायबिटीज तथा अन्य घातक रोगों जैसे कैंसर, एच.आई.वी./एड्स में न सिर्फ आराम ही पहुँचा सकता है बल्कि उन्हें पूर्ण रूप से ठीक भी कर सकता है।

अनगिनत मरीज, जिनका चिकित्सकों के पास कोई इलाज नहीं था और मरने के लिए छोड़ दिये गये थे, **उन्होंने सिद्धयोग को अन्तिम विकल्प के रूप में अपनाया और गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया तथा दीक्षा ली, वह न सिर्फ जीवित हैं बल्कि पूर्ण स्वस्थ होकर अपना सामान्य जीवन भी जी रहे हैं।** आधुनिक चिकित्सा विज्ञान जहाँ किसी बीमारी में लाभ पहुँचाने या उसे ठीक करने में असमर्थ रहता है, वहाँ योग सफलतापूर्वक उसे ठीक करता है।

हमारा शरीर एक माध्यम है, जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिये वैदिक दर्शन, साधकों के लिए जो आध्यात्मिकता के पथ पर आगे बढ़ना चाहते हैं, पूर्ण स्वस्थ होने की आवश्यकता पर बल देता है। दैनिक जीवन के एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है। मान लो हमें 'अ' स्थान से 'ब' स्थान तक की यात्रा करनी है। अगर वाहन चालू व बिलकुल ठीक हालत में है तो वह स्थान 'ब' तक हमें जल्दी और सुविधापूर्वक पहुँचाएगा, बजाए उस वाहन के, जो बुरी हालत में है। संक्षेप में, ***आध्यात्मिक प्रगति के लिए पूर्ण रूप से स्वस्थ होना पहली आवश्यकता***

है। सिद्धयोग का नियमित अभ्यास ठीक यही करता है कि वह हमें सबसे पहले पूर्ण रूप से स्वस्थ करता है।

मानव शरीर
आत्मा का भौतिक घर

हमारे ऋषियों ने गहन शोध के बाद इस सिद्धान्त को स्वीकार किया है कि जो ब्रह्माण्ड में है, वही सब कुछ पिण्ड (शरीर) में है। इस प्रकार मूलाधार चक्र से आज्ञा चक्र तक का जगत् माया का और आज्ञा चक्र से लेकर सहस्रार तक का जगत् परब्रह्म का है।

वैदिक ग्रन्थों में लिखा है कि मानव शरीर, आत्मा का भौतिक घर मात्र है। आत्मा सात प्रकार के कोशों से ढकी हुई है:- **1. अन्नमय कोश (द्रव्य, भौतिक शरीर के रूप में, जो भोजन करने से स्थिर रहता है), 2. प्राणमय कोश (जीवन शक्ति), 3. मनोमय कोश (मस्तिष्क जो स्पष्टतः बुद्धि से भिन्न है), 4. विज्ञानमय कोश (बुद्धिमत्ता), 5. आनन्दमय कोश (आनन्द या अक्षय आनन्द जो शरीर या दिमाग से सम्बन्धित नहीं होता), 6. चित्मय कोश (अनंत संकल्प शक्ति या तपस् या सचेतन शक्ति का लोक जिसे तपोलोक) तथा 7. सत्मय कोश (अन्तिम अवस्था जो अनन्त के साथ मिल जाती है)। मनुष्य के आध्यात्मिक रूप से पूर्ण विकसित होने के लिए सातों कोशों का पूर्ण विकास होना अति आवश्यक है।**

भौतिक विकासवाद के सिद्धांत के अनुसार मनुष्य ने प्रथम चार कोशों को चेतन करने में सफलता पा ली है, अन्तिम तीन कोशों को वह किस प्रकार चेतन करेगा?

श्री अरविन्द ने अपनी फ्रैन्च सहयोगी शिष्या के साथ, जो श्रीमाँ के नाम से जानी जाती थी, अपनी ध्यान की अवस्थाओं के दौरान यह महसूस किया कि अन्तिम विकास केवल तभी हो सकता है, जब लौकिक चेतना (जिसे उन्होंने कृष्ण की अधिमानसिक शक्ति कहा है) पृथ्वी पर अवतरित हो।

प्रथम चार कोश जो मानवता में चेतन हो चुके हैं, **वहाँ विद्या पर अविद्या का आधिपत्य है**। शेष तीन आध्यात्मिक कोश जो मानवता में चेतन होना बाकी हैं, यहाँ अविद्या पर विद्या का प्रभुत्व है। उपर्युक्त सातों कोशों के पूर्ण विकास को ही ध्यान में रखकर महर्षि श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है कि **''आगामी मानव जाति दिव्य शरीर (देह) धारण करेगी।''**

हमारे ऋषियों ने मनुष्य शरीर को विराट स्वरूप प्रमाणित करके, उसके अन्दर सम्पूर्ण सृष्टि को देखा, इसके जन्मदाता परमेश्वर का स्थान **सहस्रार** में और उसकी **पराशक्ति** (कुण्डलिनी) का स्थान **मूलाधार** के पास है। साधक की कुण्डलिनी चेतन होकर सहस्रार में लय हो जाती है, इसी को **'मोक्ष'** कहा गया है।





आखिर हमें गुरु की आवश्यकता क्यों है?

जब प्राणी संसार में जन्म लेता है तो वह सांसारिक ज्ञान से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ होता है। वह सर्वप्रथम अपने माता पिता से भौतिक जगत् का ज्ञान प्राप्त करता है, **उसके प्रथम गुरु उसके माता पिता होते हैं।** इसके बाद विद्यालय में जाकर भौतिक विद्या का ज्ञान प्राप्त करता है। इसके बाद वह भौतिक जगत् का ज्ञान विद्या गुरु से विद्यालय में प्राप्त करता है।



इसके बाद ज्यों ज्यों उसका ज्ञान बढ़ता जाता है, उसे आध्यात्मिक जगत्, अपनी तरफ आकर्षित करने लगता है। वह धीरे धीरे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार उसे जैसा आध्यात्मिक गुरु मिलता है, उसी स्तर का ज्ञान प्राप्त करके, उस पथ पर चलने लगता है। देवयोग से अगर रास्ता सही मिल जाता है तो कुछ हद तक अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर लेता है। अगर सीधा रास्ता नहीं मिलता तो परिणामों के अभाव में मनुष्य की आस्था धर्म पर से हट जाती है, वह इसे वर्ग विशेष की जीविका चलाने का व्यापार मात्र मान कर, इस पथ से विमुख हो जाता है। इस प्रकार संसार में ऐसे भ्रमित लोगों का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। इस प्रकार इस व्यवसाय में लगे धर्म गुरु, तुच्छदान माँग कर किसी प्रकार अपना जीवन चलाने को विवश हो जाते हैं।

इस प्रकार के आध्यात्मिक गुरुओं की दशा देखकर संसार के लोगों के दिल में धर्म के प्रति ग्लानि पैदा हो जाती है। जब संसार में यह स्थिति चरम सीमा पर पहुँच जाती है, तब भगवान् को अवतार लेना पड़ता है। यह वही स्थिति होती है, जिसका वर्णन भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में इन शब्दो में किया है: -

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानीर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।। 4:7
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।। 4:8।।

इस समय संसार में धर्म कैसी स्थिति में पहुँच चुका है, इससे आगे का पथ ही बंद हो जाता है। अतः ईश्वर का अवतार होने का यह उपर्युक्त समय है। संसार भर के प्रायः सभी संतों ने उस शक्ति के प्रकट होने के संकेत दे दिये हैं। महर्षि अरविन्द ने तो भगवान् श्रीकृष्ण के अवतार लेने की निश्चित तिथि की घोषणा कर दी थी।

श्री अरविन्द के अनुसार वह शक्ति अपने क्रमिक विकास के साथ सन् 1993-94 तक

संसार के सामने प्रकट होकर अपने तेज से पूरे जगत् को प्रभावित करने लगेगी। इस प्रकार 21 वीं सदी में पूरे संसार में एक मात्र सनातन धर्म की ध्वजा फहरेगी। **'जिस व्यक्ति में ईश्वर कृपा से और गुरु के आशीर्वाद से वह आध्यात्मिक प्रकाश प्रकट हो जाता है, ऐसा व्यक्ति सारे संसार को चेतन करने में सक्षम होता है। ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता है, ऐसे ही चेतन व्यक्ति के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।'** इस प्रकार के संत सद्गुरु के प्रकट होने पर संसार का अन्धकार दूर होने में कोई समय नहीं लगता। केवल सजीव और चेतन शक्ति ही संसार का भला कर सकती है। **''ईश्वर के धाम का रास्ता मनुष्य शरीर में से होकर ही जाता है।''** हमारे सभी संत कह गए है कि जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड (शरीर) में है। अतः अन्तर्मुखी हुए बिना उस परमसत्ता से सम्पर्क और साक्षात्कार असम्भव है। श्री अरविन्द ने भी कहा है, ''हिन्दू धर्म के शास्त्रों में बताई गई विधि से, मैंने अपने अन्दर ही उस पावन पथ पर चलना प्रारम्भ कर दिया है, जिस पर चलकर उस परमसत्ता से साक्षात्कार संभव है।

एक माह के थोड़े समय में ही शास्त्रों में वर्णित उन सभी आध्यात्मिक शक्तियों से साक्षात्कार होने लगा है, जो उस परमसत्ता तक पहुँचाने में सक्षम सहयोगी हैं। इस प्रकार मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि मैं अपने उद्देश्य में अवश्य सफलता प्राप्त कर सकूँगा। ठीक इसी प्रकार इसी रास्ते से चलकर पूर्ण सत्ता से सम्पर्क और साक्षात्कार किया हुआ चेतन व्यक्ति ही गुरु पद का अधिकारी होता है। ऐसा चेतन संत सद्गुरु ही संसार का कल्याण कर सकता है।

उससे जुड़ने वाले व्यक्ति को उस पथ पर चलकर अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने में कोई भी कठिनाई नही होती है। वह पूर्ण शुद्ध चेतन आध्यात्मिक शक्तियों के संरक्षण में अपनी जीवन यात्रा निर्विघ्न पूरी करके अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होते हैं। हमारे शास्त्रों के अनुसार मनुष्य शरीर में छः चक्र होते हैं। बिना चेतन गुरु के संरक्षण के, कोई व्यक्ति आध्यात्मिक आराधना प्रारम्भ करता है तो सफलता संदिग्ध होती है, उसे अपनी आराधना **मूलाधार** से प्रारम्भ करनी होती है। उस स्थान से चलकर छठे चक्र तक पहुँचने में, उसे कई मायावी सिद्धियों से सम्पर्क करना होता है। ये शक्तियाँ इतनी प्रबल होती है कि जीव को अपनी सीमा से बाहर नहीं जाने देती है। अगर किसी प्रकार जीव उठता-पड़ता नाभि चक्र में प्रवेश कर भी जाता है तो उससे पार निकलना असम्भव है।

इस समय सारा संसार इसी चक्र की शक्ति के इशारे पर नाच रहा है। इस क्षेत्र में पतन के सभी साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इस शक्ति के भंवरजाल में फँसकर जीव अन्त समय में भारी पश्चाताप करता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यजी से पत्रकारों ने अन्तिम समय में केवल एक ही प्रश्न पूछा था। ''आप भारत में सर्वोच्च राजनीति के शिखर तक पहुँचे हुए पहले व्यक्ति है।

आप एक मात्र भारतीय हैं जो वॉयसराय लॉर्ड के पद पर आसीन हुए। अब संसार से विदा होते समय आपको कैसा लग रहा है? राजाजी ने उतर दिया - **''मेरे इस अन्तिम समय**

में, जब मैं, मेरे पूरे जीवन पर नजर डालता हूँ तो मुझे भारी पश्चाताप होता है। मैं देख रहा हूँ, मेरे जीवन की कमाई का एक गन्दा राजनीति का घोंघा मेरे हाथ में है। मुझे इस गंदे घोंघे को लेकर आगे की यात्रा पर जाना पड़ेगा, यह देख कर मुझे भारी वेदना हो रही है। मैंने अमूल्य मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गवाँ दिया, इसका मुझे भारी पश्चाताप हो रहा है।" राजाजी जैसे व्यक्ति की अनुभूति से भी किसी ने सबक नहीं लिया। संसार भर के सभी धर्माचार्य और तथाकथित अध्यात्मवादी राजनीति की धुरी के, याचक बन कर चक्कर लगा रहे हैं। राजाजी के अनुसार उसी गन्दे घोंघे से मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना कर रहे हैं। वह गन्दा घोंघा किस स्थान पर रहता है और उसके क्या गुण धर्म है? सर्वविदित है। कहने की आवश्यकता नहीं, ये आध्यात्मिक गुरु संसार को किस दिशा में ले जाने का प्रयास कर रहे हैं।

श्री अरविन्द की भविष्यवाणी के अनुसार **"जिस समय राज सत्ता, अध्यात्म सत्ता के अधीन होकर उसके निर्देशानुसार कार्य करने लगेगी, धरा पर स्वर्ग उतर आएगा।"** हम देख रहे हैं, इस समय उल्टी गंगा बह रही है। ऐसी स्थिति में संसार का कल्याण असम्भव है। चेतन संत सद्गुरु जो कि सभी मायावी शक्तियों को पराजित करके **'अगम लोक'** की सत्ता से जुड़ चुका होता है, संसार का कल्याण करने में सक्षम होता है। **छठे चक्र यानि आज्ञाचक्र तक सारा क्षेत्र माया का क्षेत्र है, इस क्षेत्र को बिना संत सद्गुरु की कृपा के, पार करना असम्भव है।** संत सद्गुरु क्योंकि माया अतीत परम सता से सीधा सम्पर्क रखते है इस लिए मायावी शक्तियाँ, उनके आगे **करबद्ध** खड़ी रहती हैं। इस प्रकार जो जीव ऐसे चेतन संत सद्गुरु की शरण में चला जाता है, अनायास स्वतःही मायावी क्षेत्र को पार कर लेता है। इस प्रकार उसकी परम लक्ष्य तक पहुँचने की यात्रा सीधा **आज्ञाचक्र** को भेद कर प्रारम्भ होती है। गुरु कृपा से ज्यों ही आज्ञाचक्र को भेद कर जीव मायावी शक्तियों से निकल जाता है, उसके पतन के सारे रास्ते अवरूद्ध हो जाते हैं। केवल एक रास्ता परम धाम का खुला रह जाता है, जिस पर चलकर परमसत्ता में लीन होने पर आवागमन से छुटकारा मिल जाता है।

इस प्रकार सनातन धर्म में गुरु पद की जो महिमा गाई गई है। पूर्ण सत्य है। बिना गुरु के आराधना करने पर माया के क्षेत्र की, भौतिक जगत् की सारी सुख सुविधाएँ मिलना सम्भव है, परन्तु मोक्ष सम्भव नहीं है। मोक्ष तो मात्र संत सद्गुरु की शरण में जाने से मिलता है। एक बार मायावी शक्तियों के चक्कर में आ जाने के बाद उसका पतन अवश्यंभावी है। इस प्रकार असंख्य जन्मों तक ऊपर उठ उठ कर, गिरता रहता है और फिर मूलाधार से चढ़ाई प्रारम्भ करनी पड़ती है। इस प्रकार उठावा- पटकी का अन्त तब तक नहीं हो सकता, जब तक जीव संत **सद्गुरु की शरण** में नही चला जाता है। ऐसे कृपालु संत सद्गुरु का पद, अगर भक्त ईश्वर से बड़ा मानें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है! 06.02.1988



- समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग





"दीक्षा"



समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी
सियाग

गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का, एक विधान है। सभी प्रकार की दीक्षाओं में **"शक्तिपात-दीक्षा"** सर्वोत्तम होती है। इसमें गुरु अपनी इच्छा से, चार प्रकार से शिष्य की शक्ति (कुण्डलिनी) को चेतन करके सक्रिय करता है - **(1) स्पर्श से (2) दृष्टि मात्र से (3) शब्द (मंत्र) से (4) संकल्प मात्र से भी।** दीक्षा के बाद साधक को तत्काल उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति होती है, उस दीक्षा को **"शाम्भवी दीक्षा"** कहते हैं। यह महान् दीक्षा है। बहुत ही थोड़े साधकों को ऐसी दीक्षा की शक्ति के प्रभाव को सहने की सामर्थ्य होती है। ऐसे साधकों को पातंजलि योगदर्शन में **"भवप्रत्यय योगी"** की संज्ञा दी है। इस सम्बन्ध में समाधिपाद के 11 वें सूत्र में कहा है-

भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम्। (19-1)

" विदेह और प्रकृतिलय योगियों का (उपर्युक्त योग) भवप्रत्यय कहलाता है।"

(1) स्पर्श दीक्षाः-इसमें गुरु अपनी शक्ति; शिष्य में तीन स्थानों - भ्रूमध्य में अर्थात् आज्ञा-चक्र में, दूसरा हृदय, तीसरा मेरूदण्ड के नीचे मूलाधार पर स्पर्श करके प्रवाहित करता है।

(2) मंत्र दीक्षाः- गुरु की शक्ति, शिष्य में मंत्र के द्वारा प्रवाहित होती है। **'गुरु'** जिस मंत्र की दीक्षा देता है, उसे उसने लम्बे समय तक जपा हुआ होता है। मंत्र शक्ति को आत्मसात किया हुआ होता है। उस मंत्र में और गुरु में कोई अन्तर नहीं रहता । **गुरु का सम्पूर्ण शरीर मंत्रमय बन जाता है, ऐसे चेतन मंत्र की, गुरु जब दीक्षा देता है, वही मुक्ति देता है।**

(3) दृष्टि (हक-दीक्षा):- अर्थात् मात्र दृष्टि द्वारा दी जाने वाली दीक्षा। ऐसी दीक्षा देने वाले गुरु की दृष्टि, **"अन्तर-लक्षी"** होती है। यह दीक्षा वही गुरु दे सकता है, जिसने सद्गुरु से दीक्षा ली हुई हो, और जो स्वयं भी अन्तर लक्षी हो। अन्यथा यह दीक्षा देना पूर्ण रूप से असम्भव है।

ऐसे महात्माओं की आँखें खुली होती है, परन्तु वास्तव में उनका ध्यान निरन्तर अन्तरात्मा की ओर ही लक्षित रहता है। ऐसे संतों की तस्वीर देखने से सही स्थिति का पता लग जाता है। ऐसे संतो में-संत सद्गुरुदेव श्री नानक देवजी महाराज, संत श्री कबीर दासजी, श्री रामकृष्ण परमहंस इत्यादि अनेक संत हमारी पवित्र भूमि में प्रकट हो चुके हैं।

मेरे परम पूज्य, मोक्षदाता संत सद्‌गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) भी उपर्युक्त संतों की स्थिति में पहुँचे हुए, परम-सिद्धयोगी थे। यह सच्चाई सद्‌गुरुदेव का चित्र देखते ही प्रकट होती है। ऐसे परम दयालु सर्वशक्तिमान, मुक्तिदाता सद्‌गुरुदेव की, अहैतु की कृपा के कारण ही मेरे जैसे साधारण व्यक्ति में भी वह शक्ति प्रकट हो गई।

(4) मानस (संकल्प-दीक्षा) जिसमें गुरु से दीक्षा लेने का मानस बनाने मात्र से ही दीक्षा मिल जाती हैं । ऐसे कई उदाहरण मुझे मेरे आध्यात्मिक जीवन में देखने को मिले हैं। मेरे अनेक शिष्य हैं, जिनमें कुछ तो अत्यधिक चेतन हैं। उनसे बातें करने से तथा मेरी व गुरुदेव की तस्वीर देखने मात्र से कई लोगों का ध्यान लगने लगता है तथा यौगिक क्रियाएँ स्वतः होने लगती हैं। परन्तु ऐसे शिष्य बहुत कम ही हैं। इस तथ्य से एकलव्य की प्रतीक-साधना सत्य प्रमाणित होती है।

हमारे शास्त्रों के अनुसार जब तक मनुष्य की कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्रार में नहीं पहुँचती है, तब तक मोक्ष नहीं होता। पृथ्वी तत्त्व का आकाश तत्त्व में लय होने का नाम ही 'मोक्ष' है, कैवल्यपद की प्राप्ति है। **सिद्धयोग** अर्थात् **महायोग में शक्तिपात-दीक्षा** द्वारा गुरु अपनी शक्ति से शिष्य की कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं। गुरु की व्याख्या करते हुए कहा गया है- ''वह शिष्यों को उनके अन्तर में प्रभावी किन्तु सुप्त शक्ति (कुण्डलिनी) को जाग्रत करते हैं और साधक को उस परमसत्य से साक्षात्कार-योग्य बनाते हैं।

सच्चा सद्‌गुरु

इस प्रकार शान्त, स्थिर और निर्भय, वह प्राणी अपना ही नहीं संसार के अनेक जीवों का कल्याण करता हुआ, अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। **यह होता है आध्यात्मिक संत सद्‌गुरुदेव की कृपा का प्रभाव। ऐसा संत पुरुष जो मनुष्यों को द्विज बनाने की स्थिति में पहुँच जाता है, गुरु कहलाने का अधिकारी होता है। गुरु पद कोई खरीदी जाने वाली वस्तु नहीं है। यह पद न किसी जाति विशेष में जन्म लेने से प्राप्त होता है, न कपड़े रंग कर स्वांग रचने से, न किसी शास्त्र के अध्ययन से।**

यह तो मन रंगने की बात है। ईश्वर करोड़ों सूर्यों से भी अधिक ऊर्जा का पुँज है, ऐसी परमसत्ता से जुड़ने के कारण, गुरु पारस बन जाता है। अतः जो मनुष्य इस पारस के सम्पर्क में आता है, सोना बन जाता है। ऐसे गुण धर्म के बिना जितने भी गुरु संसार में विचरण कर रहे हैं, सभी ने अपने पेट के लिए विभिन्न स्वांग रच रखे हैं।

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मंत्र का रहस्य

'मंत्र विद्या' हमारे देश में आदिकाल से चली आ रही है। शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धांत पर ही हमारे ऋषियों ने मन्त्रों की रचना की है। **शब्दब्रह्म से परब्रह्म** की प्राप्ति का हमारे दर्शन का सिद्धात पूर्णरूप से सत्य है। यह हमारे दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है। **''मंत्र विद्या का पतन नकली गुरुओं के कारण हुआ।''**

बिना गुरु दीक्षा के कोई मंत्र **''सिद्ध''** हो ही नहीं सकता। मेरे माध्यम से जो परिवर्तन मानवता में आ रहा है, मात्र **''मंत्र शक्ति''** का प्रभाव है। शब्द ब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति के ही सिद्धान्त को, मैं पूर्ण सत्य प्रमाणित कर रहा हूँ। लोग कहते हैं, विज्ञान के इस युग में मंत्र की बात केवल अन्धविश्वासी लोग ही मानते हैं।

मैं चुनौती के साथ कहता हूँ कि मैं तो विज्ञान के **शोधकर्त्ताओं** से मिलने ही संसार में निकला हूँ। क्योंकि इस समय संसार में पूर्णरूप से तामसिक वृत्तियों का साम्राज्य है, इसलिए इन वृत्तियों के साधक ही संसार में नजर आ रहें हैं। ऐसे नाटक दिखाकर लोगों को आकर्षित करते हैं,आज की भाषा में उन्हें जादूगर कहते हैं। ये लोग मात्र प्रेतपूजक होते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने इस संबंध में गीता में कहा है-

यान्ति देवव्रता देवान् न्यान्ति पितृव्रता।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनो पि माम्।। 9:25

''देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं। पितरों को पूजने वाले पितरों का प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं। और मेरे भक्त मेरे को ही प्राप्त होते हैं, जब शब्द से **सर्वभूतों** की उत्पत्ति मानते हो, फिर शब्द से ही देव और दानव सभी की उत्पत्ति हुई है। आज संसार में उन्हीं शब्दों (मंत्रों) के ज्ञाता सर्वाधिक है जिनसे भूतों (प्रेतों) की उत्पत्ति हुई है। यही कारण है कि **''परा-मनोविज्ञान''** पर **शोध** करने वाले पश्चिम के शोधकर्त्ताओं को **''ऊर्ध्व गति''** और **''अधोगति''** की तरफ ढकेलने वाली शक्तियों का बिलकुल ही ज्ञान नहीं है। जबकि इनमें रात-दिन का अन्तर है। क्योंकि आज उनके पास Baptized with the ghost (प्रेतों के पूजक) के ज्ञाता ही पहुँचे हैं।

जब उनके पास Baptized with the holy ghost (पवित्रात्मा)के ज्ञाता पहुँच जाएँगे, तभी वे लोग अपने कार्यों में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। क्योंकि भौतिक विज्ञान, ऊर्ध्व गमन कर रहा है। **अतः ऊर्ध्व गमन कराने वाली शक्तियाँ ही भौतिक विज्ञान का सही पथ प्रदर्शन कर सकती है।** आज ऊर्ध्व गति वाली

शक्तियों का ह्रास होने के कारण ही हम हमारे दर्शन को प्रमाणित करने की स्थिति में नहीं हैं। हमारा दर्शन मानव के विकास,गीता में वर्णित १३वें अध्याय के २२वें श्लोक एवं पतंजलि योगदर्शन के कैवल्यपाद के ३४ वें श्लोक में वर्णित स्थिति तक कर देता है। यही बात प्रमाणित करने, **मैं विश्व में निकला हूँ।**

हमारे ऋषियों ने गहन शोध के बाद इस सिद्धान्त को स्वीकार किया कि जो ब्रह्माण्ड में है, वही सब पिण्ड में है। इस प्रकार **मूलाधार** चक्र से **आज्ञाचक्र** तक का जगत् **माया** का और आज्ञाचक्र से लेकर **सहस्रार** तक का जगत् **परब्रह्म** का है, यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया। वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) इसे स्वीकार करते हुए अपनी भाषा में **मूलाधार से आज्ञाचक्र के जगत् को अन्नमयकोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश और विज्ञानमय कोश की संज्ञा देता है।** यह जगत्-सत्ता का निम्नतर भाग है, जहाँ विद्या पर अविद्या का आधिपत्य है। आज्ञाचक्र से सहस्रार तक को आनंदमयकोश,चित्तमयकोश और सत्मयकोश की (सत् +चित् + आनंद - **सच्चिदानंद**) संज्ञा देता है। यह सत्ता का **उच्चतर अर्द्ध** है, जिसमें अविद्या पर विद्या का प्रभुत्व है। इस जगत् में अज्ञान पीड़ा या सीमा का नाम नहीं है।

'गुरु-शिष्य' परम्परा में मंत्र दीक्षा का विधान है। शब्द की धारा के सहारे ही सहस्रार में पहुँचना संभव है, अन्यथा नहीं। इस संबंध में कबीर ने रहस्योद्घाटन करते हुए कहा है-

कबीरा धारा अगम की, सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा,स्वामी संग लगाय।।

संत मत के अनुसार एक धारा अगम लोक से नीचे की ओर चली, वह सभी लोकों की रचना करती मूलाधार में आकर ठहर गई। इस प्रकार सभी लोक उस जगत् जननी राधा (कुंडलिनी) ने रचे। मनुष्य जीवन में जाग्रत करके अपने स्वामी (कृष्ण) के पास पहुँचाई जा सकती है। **राधा और कृष्ण (पृथ्वी एवं आकाश तत्त्व) के मिलन का नाम ही 'मोक्ष' है।**

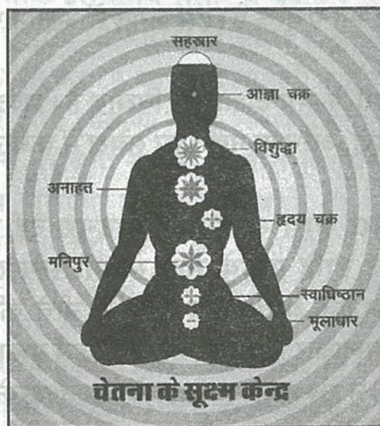
-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मंत्र का रहस्य :- तभी समझ में आ सकता है, जब गुरु, शिष्य के सद्गुणों से संतुष्ट हो जाते हैं। जब 'गुरु' हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं और **'मंत्र'** मुक्ति देता है। **''गुरु संतोष मात्रेण अन्यथा नहीं।''** इसी कारण आज गुरुदेव की मंत्र दीक्षा, मानवता में बहुत बड़ा परिवर्तन ला रही है।

कुण्डलिनी जागरण

जिस देवी शक्ति को बाहर हम राधा, सीता, पार्वती, अम्बा, भवानी, योगमाया, सरस्वती आदि नामों से पूजते हैं वही चेतना हमारे शरीर में, रीढ़ की हड्डी के अन्तिम सिरे अर्थात् मूलाधार में नागिन (सर्पिणी) के रूप में साढे तीन फेरे (कुण्डली) लगाकर सुषुप्त अवस्था में रहती है। जिसे योगियों ने कुण्डलिनी कहा है। इसके जाग्रत हुए बिना मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहता है। समर्थ सद्गुरु की करूणा से ही वह आदि शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत् होती है।

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अन्तर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मनुष्य शरीर में है। जब ऋषियों ने और गहन खोज की तो पाया कि इस जगत् का रचयिता **'सहस्रार'** में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना की गई। उस परम पुरूष की शक्ति उसके आदेश से नीचे उतरती गई। इसके चेतन होकर ऊर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। गुरु-शिष्य परम्परा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का इस शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परम सत्ता की **'पराशक्ति'** है। अतः यह मात्र उसी का आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को **सहस्रार** में स्थित उस **परमतत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में एक समय में मात्र एक व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। अतः संसार में, एक समय में यह कार्य मात्र एक ही व्यक्ति द्वारा संपन्न हो सकता है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।



चेतना के सूक्ष्म केन्द्र

जिस देवी शक्ति को बाहर हम राधा, सीता, पार्वती, अम्बा, भवानी, योगमाया, सरस्वती आदि नामों से पूजते हैं। वही परम चेतना हमारे शरीर में, रीढ़ की हड्डी के अन्तिम सिरे अर्थात् मूलाधार में **नागिन (सर्पिणी)** के रूप में **साढे तीन फेरे**

लगाकर **सुषुप्त अवस्था** में रहती है, जिसे योगियों ने कुण्डलिनी कहा है। इसके जाग्रत् हुए बिना मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहता है। समर्थ सद्‌गुरु की करूणा से ही वह आदि शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत होती है।

संत कबीरदासजी ने उसी शक्ति का वर्णन करते हुए कहा है कि-

कबीरा धारा अगम की,सद्‌गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा स्वामी संग लगाय।।

संत मत के अनुसार एक धारा अगम लोक से नीचे की ओर चली, वह सभी लोकों की रचना करती हुई मूलाधार में आकर ठहर गई। इस प्रकार सभी लोक उस जगत् जननी राधा (कुण्डलिनी) ने रचे। मनुष्य जीवन में उसे जाग्रत करके अपने स्वामी (कृष्ण) के पास पहुँचाई जा सकती है। राधा और कृष्ण (पृथ्वी एवं आकाश तत्त्व) के मिलन का नाम ही ''मोक्ष'' है। परन्तु जिस गुरु को आकाश तत्त्व (कृष्ण) की सिद्धि होती है, मात्र वही इस काम को कर सकता है अन्य कोई नहीं। यह हमारे धर्म शास्त्र व बीते इतिहास से जाना जा सकता है। स्वामी विवेकानंदजी ने अनेक गुरुओं से वार्तालाप किया लेकिन उनमें तत्त्व ज्ञान की जागृति कोई नहीं कर सका।

आखिर **श्रीरामकृष्ण परमहंस** के पास ही समाधान हो सका। महर्षि श्री अरविन्द ने कुण्डलिनी को यों वर्णित किया है-यह योगशक्ति है। यह हमारी अन्तर सत्ता के सभी केंद्रों (चक्रों) में कुण्डलित होकर सीधी पड़ी है और सबसे नीचे के तल में, जो रूप है उसे तन्त्रों में कुण्डलिनी कहा गया है। परन्तु यह हमारे ऊपर, हमारे सिर के ऊपर दिव्य शक्ति के रूप में विद्यमान है- वहाँ वह कुण्डलित, निवर्तित, प्रसुप्त नहीं है बल्कि जाग्रत, चेतन, शक्तिपूर्ण, प्रसारित और विशाल है; यह वहाँ अभिव्यक्त होने के लिए प्रतीक्षा कर रही है और इसी शक्ति की ओर हमें अपने आपको खोलना होगा।

यह शक्ति मन के अन्दर एक **दिव्य मानस शक्ति** के रूप में प्रकट होती है और यह ऐसे प्रत्येक कार्य को कर सकती है जिसे व्यक्तिगत मन अभिव्यक्त नहीं कर सकता; यह उस समय **यौगिक** मानस शक्ति बन जाती है। जब यह उसी तरह प्राण या शरीर में प्रकट होती है और कार्य करती है, तब यह वहाँ एक यौगिक प्राण शक्ति या यौगिक शरीर शक्ति के रूप में दिखाई देती है।

यह बाहर की ओर ऊपर की ओर फूट कर तथा नीचे की ओर विशालता में फैलकर, इन सभी रूपों में जाग्रत हो सकती है। अथवा यह अवतरित हो सकती है और वहाँ वस्तुओं के लिए एक सुनिश्चित शक्ति बन सकती है। यह नीचे की ओर शरीर में बरस सकती है। वहाँ कार्य करके, अपना राज्य स्थापित करके, ऊपर से विशालता के अन्दर प्रसारित होकर हमारे अन्दर के सबसे नीचे के भागों को हमारे ऊपर के उच्चतम भागों के साथ जोड़ सकती है, व्यक्ति को एक विराट् **विश्वभाव** में या निरपेक्षता और **परात्परता** में ले जाकर मुक्त कर सकती है।

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग



'मृत्यु' कठिनाइयों का हल नहीं

जन्म और मृत्यु जीवन के दो अटल पहलू है। जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु निश्चित है। कोई जन्मते ही मर जाता है। कोई 5 वर्ष बाद, कोई 20, 30, 50 या 100 साल बाद, आखिर मरना ही पड़ता है लेकिन वर्तमान की आपाधापी व भागम-भाग की जिन्दगी में मानव अपनी कार्य प्रणाली से बोखला सा गया है। बात-बात पर बोल उठता है। **'हे भगवान्! मौत दे।'**

जब जीवन के सामने कठिनाईयों के पहाड़ खड़े होते हैं, चारों ओर से निराशाएँ घेर लेती है, कोई भी सहयोग को तैयार नहीं होता है या आर्थिक तंगी से जूझने लगता है या परीक्षा के समय लक्ष्य से विद्यार्थियों को कम सफलता मिलती है।

पति-पत्नी का झगड़ा, पिता-पुत्र का झगड़ा या जीवन के किसी भी पहलु का हल तुरन्त नहीं निकले तो आज का अभागा मानव उसका हल, आत्महत्या में ढूँढ़ता है और अपनी इह लीला को समाप्त कर देता है। उन सबका मुख्य कारण है **'अज्ञानता व आध्यात्मिक चेतना की कमी।'** यदि मानवीय सद्गुणों में चेतना की उच्चतर शक्तियाँ परवान पर हो तो जीवन का हर कार्य सरल व सुगम बन जाता है। वह मरने की बजाय हर कठिनाई का हल अपने अथक प्रयासों से ढूँढ ही लेता है, लेकिन हारता नहीं।

वैदिक दर्शन के अनुसार सर्वोत्तम व पूर्ण जीवन की नींव सद्गुरु कृपा से ही शुरू होती है। मनुष्य स्वयं परमात्मा है, वह केवल कठिनाईयाँ झेलने ही इस संसार में नहीं आया है बल्कि अपने आपको सिद्ध करने आया है कि वह एक विशाल समुद्र की अटल नदी है जो वापस समुद्र में मिलेगी। जीवन की हर समस्या का समाधान भौतिक शरीर के रहते हुए ही किया जा सकता है। मरने के बाद समस्या ज्यों की त्यों ही बनी रहती है। वैदिक दर्शन के अनुसार एक जीवन में सर्वोत्तम निखार सद्गुरु करूणा से ही संभव है। आज मृत्यु ने महाताण्डव मचा रखा है। **'मृत्यु'** के संबंध में 'श्री माँ ने जीवन' नामक पुस्तक के पृष्ठ 71 पर बहुत ही अच्छे ढ़ंग से समझाया है कि मृत्यु जीवन की कठिनाईयों का हल नहीं है।

श्रीमां के ही शब्दों में **''मृत्यु कोई हल नहीं है-बिल्कुल नहीं है। मृत्यु अस्तित्व के अनंत चक्रों में भद्दे और यांत्रिक ढ़ंग से वापस आना है। जो चीज तुम एक जीवन में सिद्ध नहीं कर पाये उसे तुम्हें दूसरे जीवन में, साधारणतः कहीं अधिक कठिन परिस्थितियों में सिद्ध करनी होगी।**

मृत्यु वह बिल्कुल नहीं है जो तुम उसे समझते हो। तुम आशा करते हो कि मृत्यु से निश्चेतन विश्राम की तटस्थ शांति मिलेगी। लेकिन ऐसा विश्राम पाने के लिए तुम्हें तैयारी करनी पड़ेगी। मरकर तुम केवल अपना शरीर ही खोते हो, और उसके साथ ही भौतिक जगत् के साथ संबंध और उस पर क्रिया करने की क्षमता भी चली जाती है, पर भौतिक द्रव्य के समाप्त होने के साथ प्राणमय जगत् की सब चीजें नष्ट नहीं हो जाती। तुम्हारी सभी इच्छाएँ, आसक्तियाँ, लालसाएँ, सभी बनी रहती हैं और उनके साथ कुण्ठा और निराशा रहती है और ये चीजें तुम्हें अपेक्षित शांति नहीं पाने देती। शांत और घटना-शून्य, मृत्यु का आनंन्द लेने के

लिये तुम्हें तैयारी करनी पड़ेगी। **इच्छाओं का उन्मूलन ही एकमात्र प्रभावशाली तैयारी है।** जब तक हमारा शरीर है, हमें क्रियाशील रहना ही होगा, कुछ काम करना होगा। अगर हम कर्त्तव्य समझकर, परिणाम की लालसा के बिना, उसे ऐसा या वैसा रूप देने की इच्छा के बिना, काम करते चलें तो हम उतरोत्तर अनासक्त होते जाते हैं और इस तरह अपने-आपको विश्रामपूर्ण मृत्यु के लिये तैयार करते हैं।

श्री मां ने आत्महत्या के संबंध में बड़ी विचित्र बात लिखी है जो आज के समय की भयंकर समस्या है- **"यह निश्चित रूप से जानो कि मनुष्य जितने मूर्खतापूर्ण काम कर सकता है, उनमें सबसे बढ़कर मूर्खतापूर्ण है 'आत्महत्या' शरीर का अंत, चेतना का अंत नहीं है। जो चीज तुम्हें जीते जी तकलीफ दे रही थी, वह मरने के बाद भी तकलीफ देती रहेगी। जीते जी मन को किसी और दिशा में मोड़ने की संभावना रहती है, मरने पर वह भी नहीं रहती।"**

जीवन और मृत्यु का रहस्य सद्गुरु कृपा से ही समझ में आता है। मृत्यु क्या है ? इसकी जीते जी जानकारी हो जाती है। पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग के माध्यम से भारतीय सिद्धयोग दर्शन व अद्वैतवाद, मूर्तरूप ले रहा है। यदि आज की मानव-जाति इस परम रहस्य व सिद्धयोग दर्शन को अपने जीवन में उतारें तो आज की विकट समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। **'मौत'**, नये सिरे से जन्मना है। मौत, मौत में अंतर है, एक मौत बार-बार जन्म-मरण का चक्र चलाती है तो दूसरी बन्धन काट देती है। व्यक्ति जीते-जी जीवन मुक्त हो जाता है। इस संबंध में कबीरदास जी ने बड़ा ही सटीक लिखा है-

जा मरने से जग डरे, मौरे मन आनंद।
कब मरिहों, कब पाइहों, पूर्ण परमानंद।।

-साधक

"स्पिरिचुअल-साइंस"

मासिक पत्रिका कैसे प्राप्त करें ?

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर से 'स्पिरिचुअल-साइंस' (Spiritual Science) नाम से एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। जिसमें सिद्धयोग व शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण से मानव मात्र में जो दिव्य परिवर्तन आ रहा है, रोगों व नशों से मुक्ति मिल रही है, साधकों को **ध्यान** व **समाधि** स्थिति में जो अनुभूतियाँ हो रही हैं, उसकी विस्तृत जानकारी इस पत्रिका में हर महीने दी जाती है। इसका निर्धारित शुल्क जमा कर, नियमित पाठक बन सकते हैं- **वार्षिक-300/-, द्विवार्षिक-600/- व आजीवन (11 वर्ष) -3000/-** रोकड़, ड्राफ्ट या मनी ऑर्डर (Spiritual Science) नाम से कार्यालय को भेज सकते हैं। संपर्क -09784742595

गुरुदेव का आदेश

"अगर मुझे या गुरुदेव को कोई आदेश या दिशा-निर्देश देना होगा तो सीधा आपको दिया जाएगा। गुरु कभी किसी के माध्यम से संदेश नहीं देता।"

प्रिय श्री चुन्नी लाल जी! खुश रहो। आपकी लड़की जो कह रही है तथा कर रही है, उस पर विश्वास मत करना। यह कलियुग है, इसमें तामसिक शक्तियों का साम्राज्य है। मेरे या गुरुदेव के नाम से आपको कोई कुछ भी कहे, विश्वास मत करना। अगर मुझे या गुरुदेव को कोई आदेश या दिशा निर्देश देना होगा तो सीधा आपको दिया जायेगा। गुरु कभी किसी के माध्यम से संदेश नहीं देता है। अतः आपके पास जो लौंग हैं उनमें से 2 सुबह 2 शाम दाल या सब्जी में डालते रहो।

लड़की के कहने के अनुसार कुछ भी मत करना। आप अपने विवेक से जो ठीक समझें करना। भविष्य में कोई भी व्यक्ति मेरे या गुरुदेव के नाम से कुछ भी कहे विश्वास मत करना। आपको दिशा निर्देश हो, और वह भी ध्यान के समय उसी को सत्य मानना।

शुभाशीष सहित

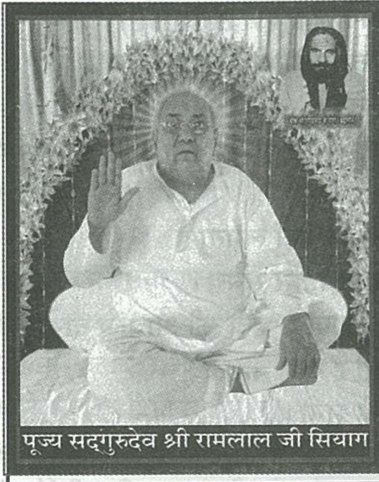
रामलाल सियाग,
08-9-94
जोधपुर

एकमात्र मेरी शरण में आ जा !

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

-श्री मद्भागवद् गीता (66:18)

"समस्त धर्मों का (सभी सिद्धांतों, नियमों, हर तरह के साधनों और विधानों का, चाहे वे पूर्व के अभ्यास या विश्वास द्वारा निर्मित हुए हों या बाहर से हमारे ऊपर लाद दिये गये हों, उन सबका)परित्याग कर और एकमात्र मेरी शरण में आ जा; मैं तुझे समस्त पापों और दोषों से मुक्त कर दूँगा-तू शोक मत कर।" "मैं मुक्त कर दूँगा-तुम्हें इस तरह परेशान होने या संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं, मानो सारा उत्तरदायित्व तुम्हारा ही हो और परिणाम तुम्हारे प्रयास पर ही निर्भर करता हो, तुमसे कहीं अधिक शक्तिशाली सत्ता इस कार्य में लगी हुई है। चाहे कोई रोग-शोक हो या संकट उत्पन्न हो या तुम्हारे अंदर कोई पाप या मलिनता उमड़ती हो-किसी बात से तुम्हें जरा भी घबराना नहीं चाहिये। केवल उन भगवान् को दृढ़तापूर्वक पकड़े रहो।



पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"मैं तुझे समस्त पापों और दोषों से मुक्त कर दूँगा।" -स्वयं भगवान् तुम्हें इन सबसे मुक्त कर देंगे। परन्तु यह मुक्ति अचानक किसी चमत्कार के रूप में नहीं आती, यह पवित्रीकरण की एक प्रक्रिया के द्वारा आती है और ये सब चीजें उसी प्रक्रिया का एक अंग है। ये सब चीजें ठीक उस धूल के जैसी हैं, जो बहुत दिनों तक गंदे पड़े हुए कमरे को अंत में साफ करते समय, बादल की तरह छा जाती हैं। यद्यपि उस धूल से दम घुटता-सा मालूम होता है, फिर भी अपने प्रयास में बराबर लगे रहो, थोड़े समय बाद धूल का बवण्डर छंट जाता है। "मा शुचः"- शोक मत कर।

- श्री अरविन्द



शंका समाधान :-

इस नाम को जपोगे और मेरा ध्यान करोगे तो जो माँगोगे, वही मिलेगा।

"नाम जप ही इस आराधना में आगे बढ़ने का ठोस आधार है।"

-सद्‌गुरुदेव श्रीरामलालजी सियाग

दिनांक-5.4. 2012 को जोधपुर आश्रम में शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम के दौरान साधकों की शंकाओं का सद्‌गुरुदेव ने समाधान किया-

साधक. :- मुझे एड्स है, (HIV Positive)

गुरुदेव :- आपकी पत्नी को भी है क्या?

साधक :- जी हां गुरुदेव।

गुरुदेव :- दोनों ही 15 मिनट ध्यान करो और हर समय नाम जपते रहो, ठीक हो जाओगे।

साधक :- गुरुदेव, ध्यान नहीं लगता है

गुरुदेव :- नाम जपते रहो, हर समय।

साधक. :- गुरुदेव, अजपा व घंटी की आवाज दोनों साथ-साथ सुनाई देती है क्या करूं?

गुरुदेव :- अजपा को सुनो।

साधक. :- गुरुदेव, मैं और मेरे परिवार के सभी लोग आप का ध्यान कर रहे हैं। मैंने दो साल से देवी-पूजा व नवरात्रा करना बंद कर दिया हैं, कोई परेशानी तो नहीं हो जाएगी?

गुरुदेव :- कोई परेशानी नहीं होगी। अब मैं आ गया हूँ, अब मेरा ध्यान करो। **मैं दसवाँ अवतार हूँ, मैं कल्कि अवतार हूँ।**

साधक. :- गुरुदेव, 15 मिनट से ज्यादा ध्यान कर सकते हैं?

गुरुदेव :- केवल 15 मिनट ही ध्यान करो और मंत्र हर समय जपो, राऊण्ड द क्लॉक। ध्यान आपको 15 मिनट ही करना है। कुछ लोग देर तक बैठे रहते हैं, बाद में मुश्किल हो जाएगी।

साधक :- गुरुदेव बीपी की शिकायत है।

गुरुदेव- ध्यान करो, नाम जपो हर समय, ठीक हो जाएगा

"दुनिया की उत्पत्ति जिस शब्द से हुई है, उसी शब्द में उसकी सभी समस्याओं का समाधान भी संभव है।"

साधकः- गुरुदेव मेरे हृदय में छेद है।

गुरुदेवः- कितना समय हो गया?

साधकः- साल भर पहले डॉक्टर को दिखाया था, कहते हैं ऑपरेशन करवाना पड़ेगा।

गुरुदेवः- हार्ट का नहीं होता है, ठीक हो जाएगा, नाम जपो।

साधक :- गुरुदेव दोनों किडनियाँ खराब है, डाइलेसिस पर हूँ

गुरुदेव- कहाँ से आए हो?

साधकः- उड़ीसा से।

गुरुदेवः- ठीक हो जाएगी, नाम जपो।

साधकः-गुरुदेव, क्या नाद एक कान से सुनाई देता है।

गुरुदेव :-हाँ, एक से भी और दोनों से भी।

साधक :- ऐसा इस मंत्र में क्या है; और यह प्रकिया और योग Technique से कैसे Different है।

गुरुदेव :-कृष्ण नौंवे अवतार थे और मैं दसवा अवतार हूँ। मैं कल्कि अवतार हूँ, मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है। राम और कृष्ण की फोटो से ध्यान नहीं लगता है।

साधकः- महर्षि अरविंद ने अपनी किताब में वर्णन किया है कि मनुष्य की कोई योजना नहीं होनी चाहिए अपितु एक लक्ष्य होना चाहिए, रास्ते अपने आप बन जाते हैं।

गुरुदेवः -बिल्कुल, उस किताब में मेरे अवतार की व्याख्या है और उसमें लिखा एक एक शब्द बिल्कुल सही है और मेरे लिए लिखा गया है। मैं कल्कि अवतार हूँ।

साधकः- दिन भर के काम और Busy Schedule की वजह से सघन नाम जप नहीं कर पाते हैं, ऐसे में अजपा कैसे हो?

गुरुदेवः-कोई बात नहीं, सुबह जल्दी उठ कर ध्यान करें। जब मरीजों को देखते हो पूरा ध्यान उन पर ही दो।

साधकः-मुझे गायत्री हवन करना चाहिए या नहीं?

गुरुदेवः-गायत्री पूजा संन्यासियों के लिए हैं। गृहस्थ के लिए नहीं। मैंने भी गायत्री साधना कर रखी है पर उसने मुझे केवल निर्धनता दी। पर जब से राधा कृष्ण की दीक्षा ली है तब से मैं सम्पन्न हूँ।

साधकः-गुरुदेव ये तामसिक शक्तियाँ, इस समय लोगों को बहुत परेशान कर रही हैं, ये नष्ट कब होंगी ?

गुरुदेवः- होंगी, जरूर होंगी। इसमें थोड़ा समय लगेगा। महर्षि अरविंद ने कहा है -

Iron age is ended कलियुग पूरा खत्म हो गया है।

मगर उसका प्रभाव बाकी है।

साधकः-क्या ये तामसिक शक्तियाँ पूरी तरह से नष्ट नहीं हो सकती ?ये आपको भी परेशान करती हैं ?

गुरुदेवः-बेटा ये तामसिक शक्तियाँ मेरे पास फटक भी नहीं सकती। ये मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। इन तामसिक शक्तियों का अन्त होगा, मैं इसी लिए आया हूँ।..."**मैं मानवता में सतोगुण का उत्थान और तमोगुण का पतन करने अकेला ही निकल पड़ा हूँ, मुझ पर किसी भी जाति विशेष, धर्म विशेष या देश विशेष का एकाधिकार नहीं है**"। मैं दसवां अवतार, कल्कि अवतार हूँ और कल्कि अवतार के सभी Rights (अधिकार) मेरे पास हैं।

साधकः-ध्यान करने के पश्चात् बहुत नींद आती है। और कई बार सो जाती हूँ।

गुरुदेवः-वह निद्रा नहीं, तंद्रा है, उस नींद में देखा गया स्वप्न हमेशा सच होता है।

साधकः-क्या आपका नाम ले कर मरीज का इलाज करें तो आप मेरे साथ खड़े होंगे ?

गुरुदेवः-बिल्कुल, मेरा नाम लेकर इलाज करो, मैं हमेशा साथ रहूँगा। विज्ञान जल्दी चीजों को मानता नहीं। पर नाम जप और ध्यान से हजारों एड्स के मरीज ठीक हुए हैं।

साधक- गुरुदेव मैंने गायत्री मंत्र की व अन्य तरह की आराधनाएँ भी की हैं, क्या मुझे उनका इस आराधना में लाभ मिलेगा ?

गुरुदेव :- नहीं, उनका इस आराधना से कोई लिंक (संबंध) नहीं है।

इस आराधना में आगे बढ़ाने की ड्यूटी मेरी है।

साधकः-**गुरुदेव अभी आप सशरीर हैं, हम आपसे अपनी समस्याओं पर प्रश्न पूछ सकते हैं, अपनी शंकाओं के समाधान के लिए बात कर सकते हैं,**

आपके शरीर छोड़ने के बाद हमारी शंकाओं का समाधान कैसे होगा ?

गुरुदेवः- **देखो, मैं कल्कि अवतार हूँ, मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है। मेरे जाने के बाद "मेरी तस्वीर" तो नहीं मरेगी ? वह आपको जवाब देगी।**



रोगों व नशों से पूर्ण मुक्ति संभव

◆ मैं **शराब** के नशे का बहुत लम्बे समय से आदी था। इस वजह से मेरा पूरा परिवार बहुत परेशान था। मैं शराब पीकर हर किसी से झगड़ पड़ता था। फिर किसी ने सद्‌गुरुदेव सियाग के बारे में बताया। मैंने गुरुदेव से मंत्र दीक्षा लेकर सघन जप व ध्यान शुरू किया। जिससे मेरे शराब की लत छूट गई। आज पिलछे 16-17 साल से, मैं गुरु कृपा से स्वस्थ व नशा मुक्त जीवन जी रहा हूँ।

-गंगाराम मेघवाल, बोरानाडा (जोधपुर) राज.

◆ मैं **शराब, अफीम व जर्दे** की लत से परेशान था। गुरुदेव द्वारा बताए नाम जप व नियमित ध्यान से, आज मैं इन नशों से पूर्ण रूप से मुक्त हूँ।

-चन्दूराम गोदारा, भणियाणा (जैसलमेर) राज.

◆ मेरे पेट का **कैंसर** था। जोधपुर, बीकानेर व अहमदाबाद आदि सब जगह इलाज कराया। फिर भी मेरी दिनोंदिन हालत खराब होती ही जा रही थी। फिर मुझे गुरुदेव का ध्यान करने को सिखाया गया। गुरुदेव से मंत्र दीक्षा लेकर सघन नाम जप व नियमित ध्यान से आज मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ तथा अपना काम करता हूँ।

-पुखराज वाम्भु, रामनगर (बाड़मेर) राज.

◆ मैं पिछले 15 वर्षों से **माईग्रेन** से पीड़ित था। फिर **प्रोस्टेट** की तकलीफ भी हो गई। फरवरी-मार्च 2010 से मैंने गुरुदेव का सघन नाम जप व नियमित ध्यान शुरू किया। उसके बाद आज मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ।

-श्री कृष्ण शर्मा, झोटवाड़ा (जयपुर)

◆ मैं जन्म से ही **वंशानुगत मस्से (बवासीर)** से पीड़ित था। फिर **शराब** भी पीना शुरू किया। जीवन बड़ा कष्टमय था। फिर किसी के कहने से मैंने गुरुदेव से दीक्षा लेकर नाम-जप व ध्यान शुरू किया। ये बात सन् 1992-93 की है। आज मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ। **-रामाराम पटेल,जोधपुर(राज.)**

◆ मैं बहूत ही कष्टमय जीवन जी रहा था। मेरे **किडनी में पथरी** थी। इसलिए हर समय पेट दर्द की शिकायत रहती थी। पढ़ाई में बहुत ही कमजोर था। आठवीं में दो बार फेल हो गया। गुरुदेव से दीक्षा लेकर नाम-जप व ध्यान करने से, मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया। मेरी पढ़ाई में भी एकाग्रता बढ़ने लगी और मैंने **दसवी कक्षा-द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण की**। आज मैं आध्यात्मिक व भौनिक दोनों ही तरह से संपन्न हूँ। **-छगनकुमार प्रजापत, झालामण्ड (जोधपुर)**

मुझे अनुभूति हुई, यह सबसे बड़ा आश्चर्य

शक दूर हुआ, सुख-सच्चिदानंद मिल गया, क्षण में जीवन दिख गया।

आश्चर्य की बात यह है कि जब मैं गुरुदेव के संग फोटो खिंचवाने के लिए उनके चरणों में बैठ गया और उस कृपा के आनंद के महान् ब्रह्माण्ड के विधाता ने सिर पर हाथ रख दिया और जैसे ही हाथ रखा तो बिजली सी, अंदर सिर से पाँव तक दौड़ गई और जोर-जोर से महान् शक्ति कुण्डलिनी की महानतम क्रियाएँ शुरू हो गई।

मेरी शुरू से ही अध्यात्म में रूचि थी। एक दिन मैं और मेरे मामा जी हमेशा की तरह टीवी पर पूरी तरह सत्संग देखने में खो गए तो बीच में ही मामाजी के बेटे ने चैनल चैंज कर दिया और मानो कि मेरे तो भाग्य में उजाला हो गया क्योंकि सत्संग की किताबें पढ़कर और देखकर इच्छा किया करता था कि मुझे भी शक्तिपात करने वाला गुरु चाहिए और उस महान् गुरु ने आखिर दर्शन दे ही दिया।

उस समय हमने देखा कि गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग लोगों को मंत्र से दीक्षा देकर शक्तिपात करते हैं। मैं बहुत खुश हो गया। दूसरे दिन मैंने इंटरनेट पर गुरुदेव का वीडियो देखा तो उसमें लोगों को वह महानतम योग की क्रियाएँ हो रही थी जो सिर्फ मैंने पढ़ा था, जो वह अब प्रत्यक्ष हो रहा था।

अब मैंने ठान लिया कि गुरुदेव से दीक्षा लेने हेतु जोधपुर जाऊँ और मैं बिना बताए दो-तीन दिन का सफर पूरा कर, गुरुदेव के श्रीचरणों में पहुँच ही गया। गुरुदेव से शक्तिपात दीक्षा लेकर धन्य हो गया। अक्टूबर 2012

गुरुकृपा ही केवलम्। शिष्यस्य परम मंगलम्।।

रमेश गणेश माने
डॉ. लाजपतराय मेहरा न्यूरोथेरेपी
आर एण्ड डी सूर्यमाल, तालुका-मौखड़ा
जिला-ठाणा (महाराष्ट्र)

माइग्रेन की तकलीफ से निजात

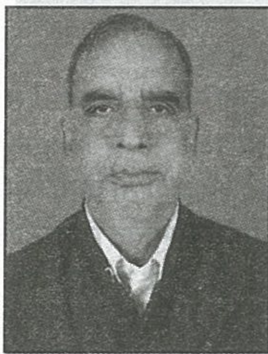


मुझे पिछले कई दिनों से खतरनाक सिरदर्द होता था। तीन साल पहले डॉक्टर ने मुझे बताया कि "तुम्हें माइग्रेन है और ये एक ऐसी बीमारी है जिसका कोई इलाज नहीं है।" मैं हर सप्ताह उनके पास जाता और दवाईयाँ लेकर आता। कई बार तो नींद की दवाईयाँ लेने पर भी नींद नहीं आती थी। आधे सिर में खतरनाक दर्द होता था।

मैंने मेरे सहपाठियों के कहे अनुसार गुरुदेव की मंत्र सीडी सुनकर ध्यान शुरू किया। नियमित ध्यान व सघन मंत्र जप से आज मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ।

रोहित यादव,
गाँव-चिमनपुरा,
तह.-शाहपुरा (जयपुर)

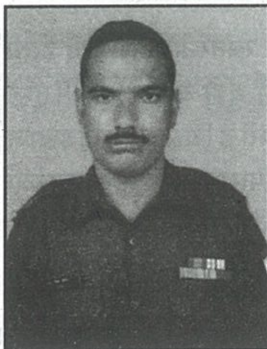
तीन वर्ष पुरानी बवासीर से सात दिन में निजात



मैं डी. के. बैराठी सेवानिवृत रीडर कोटा का रहने वाला हूँ। मैं एक साधक से सद्गुरुदेव की महिमा सुनता रहता था। टी वी पर प्रसारित होने वाले शक्तिपात-दीक्षा कार्यक्रम से दीक्षा प्राप्त की। गुरुदेव द्वारा दिये गये मंत्र का नियमित जाप शुरू किया। मात्र सात दिवस में सद्गुरुदेव द्वारा दिये गये मंत्र का जाप करने से तीन वर्ष पुरानी मस्से एवं बवासीर की बीमारी जड़ से समाप्त हो गई है। सिद्धयोग दर्शन का प्रत्यक्ष परिणाम मैंने मेरे जीवन में घटित होते देखा है।

डी.के. बैराठी,
कोटा (राज.)

गुरुकृपा से हेपेटाइटिस बी से मुक्त हुआ



मैं जब Army में जामनगर में Posted था, मुझे पीला पेशाब आने लगा तो जाँच कराई । 4 सितम्बर 2009 को मेरा Serum Bilirubin 1.8 आया, फिर 6.3 और अगली जाँच में 12.4 और 17 सितम्बर 2009 को 29.33 हो गया। मुझे Military Hospital जामनगर में भर्ती कर दिया।

जब मैंने दूसरे मरीजों से पूछा तो उन्होंने बताया कि **Hepatitis B Negative** नहीं आता है। हमारे दो साल से इंजेक्शन चल रहे हैं और 48 इंजेक्शन ले चुके हैं और **Hepatitis B Negative** नहीं हुआ है। यह सब सुनकर मैं निराश हो गया व चिन्ता में रहने लगा कि कौनसी बीमारी हो गयी।

मेरे तो घर-परिवार में भी किसी को यह बीमारी नहीं है, मेरा खाना-पीना भी छूट गया और रात-दिन चिन्ता सताने लगी। एक दिन शाम 5 बजे, मैं नीचे गार्डन में चला गया तो कई मरीज बैठे ध्यान कर रहे थे। मुझे पता नहीं था, ये क्या कर रहे हैं। किसी मरीज से पूछा तो उसने बताया कि ये गुरुजी का ध्यान कर रहे हैं और गुरुजी का ध्यान करने से कोई भी बीमारी ठीक हो जाती है। मैं यह बात सुनकर वहाँ चला गया। वहाँ पर एक साधक ध्यान करवा रहे थे। मैंने भी वहाँ बैठकर ध्यान किया। मुझे **असीम शांति** का एहसास हुआ।

मुझे यह बड़ा कमाल लगा। ध्यान शुरू किया था, 10 अक्टूबर को और उसके बाद Serum Bilirubin 1.3 हो गया 17 नवम्बर 2009 को मुझे Hospital से छुट्टी दे दी। मैंने वापस Hepatitis B Test करवाया तो 15 दिसम्बर Negative Report आयी। उसके बाद दो बार Test Report करवाया तो दोनों बार Hepatitis B Negative आया। गुरुदेव ने मुझे इस बीमारी से मुक्ति दिला दी। मेरी यही राय है कि गुरुदेव का ध्यान व नाम-जाप से कैसा भी संकट हो चुटकी में ठीक हो जाता है व **असीम आनन्द** मिलने लगता।

रेंवतसिंह
गाँव-खातोलाई
पोस्ट-आंटरोली खुर्द नागोर (राज.)

गुरु कृपा से टी. बी. मुक्त हुआ

मैं रमेश अधिकारी भारतीय थल सेना में कार्यरत हूँ। मेरे शरीर में तकलीफ होने पर मुझे एम. एच. जामनगर में भर्ती कर दिया व बताया कि आपको टी. बी. की तकलीफ है। मुझे एम. एच. जामनगर से सी. टी. सी. पूणे भेज दिया। यह टी. बी. का हॉस्पिटल है। मेरे मन में खलबली मचने लगी व डर लगने लगा कि यह कैसी बीमारी हो गयी !

मैं लगातार चिन्ता करने लगा। मेरे पास में सोमवीर नाम का लड़का एडमिट था और उसकी खाट पर गुरुदेव का फोटो लगा था। सोमवीर ने मुझे गुरुदेव का फोटो व पेम्पलेट पढ़ने को दिया। शाम को मैं हॉस्पीटल के गार्डन में ध्यान करने लगा। नियमित नाम जप व ध्यान से आज मैं पूर्णतः ठीक हूँ।

- रमेश अधिकारी तनहूँ दामोली, नेपाल

पार्किंसन ठीक हुआ



गत कई वर्षों से मैं एक भयंकर बीमारी से पीड़ित था, जिसके कारण मैं बहुत ही दुःखी और परेशान रहता था। मैंने बहुत से डॉक्टरों एवं विशेषज्ञों जैसे कि न्युरोलॉजिस्ट, मनोचिकित्सक एवं फिजीशियन को दिखा चुका था।

मेरा सिजोफेनिया, पार्किंसन एवं एक्यु डिप्रेशन डिसऑर्डर जैसी बीमारियाँ का इलाज चल रहा था। मैंने सारी उम्मीदें खो दी थी। मैं वर्ष 2009 में नवनीत भाई हिंगु जी से मिला, जिन्होंने मुझे सिद्धयोग से परिचित कराया।

मैंने गुरुदेव द्वारा दिये मंत्र का सघन जाप व नियमित ध्यान शुरू किया। आज मैं सदगुरुदेव की असीम कृपा से पूर्ण स्वस्थ हूँ।

- सलिल धनजंय
गोरे गाँव (पश्चिम) मुंबई

> **"भारत सच्ची स्वतंत्रता, राजनैतिक अस्त्रों के माध्यम से नहीं वरन् आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा ही प्राप्त करेगा। -महर्षि अरविन्द**

25 वर्ष पुरानी भांग व सिगरेट की आदत से छुटकारा।

मैं एक नारकीय जीवन जी रहा था। पिछले 25-27 साल से सिगरेट व भांग का आदी था। हमेशा आत्महत्या करने की सोचता था। लेकिन गुरुदेव से शक्तिपात दीक्षा लेने के बाद मेरा जीवन ही बदल गया। अब मैं कोई नशा नहीं करता हूँ। तथा गुरुदेव की कृपा से सुख-शांति मय जीवन जी रहा हूँ।

श्याम सुंदर शर्मा छावनी सब्जी मण्डी, कोटा

कमर दर्द (स्लिप-डिस्क) से मुक्ति



मैं पतासी देवी गुरुदेव से दीक्षा लेने से पूर्व कई देवताओं के यहाँ जाती रहती थी। क्योंकि मेरे शरीर में कई राक्षसी शक्तियों का प्रकोप रहता था। जिससे कई बार मेरा गला अवरूद्ध हो जाता था। मेरे मुँह से आवाज भी नहीं निकलती थी। भयंकर कमर दर्द होता था। मैं चल फिर नहीं सकती थी। गुरुदेव से दीक्षा लेने के बाद मैं धीरे धीरे बिल्कुल ठीक हो गई। अब मैं पूर्णतः ठीक हूँ। ऐसे समर्थ सद्गुरु भगवान् को बारंबार नमन् करती हूँ।

श्रीमती पतासी देवी,जोधपुर (राज.)

सिद्धयोग से ट्यूमर कैंसर ठीक हुआ

मेरे ट्यूमर कैंसर था। नियमित नाम जप व ध्यान से मैं पूर्णतः ठीक हो गया। गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की अमर तस्वीर में अद्भुत शक्ति है इसी कारण दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति का ध्यान लग जाता है। तथा स्वतः ही यौगिक क्रियाएँ शुरू हो जाती हैं। इन स्वतः होने वाली यौगिक क्रियाओं से ही सभी रोगों व नशों से मुक्ति मिलती है।

वी राजशेखर (26वर्ष)
भारतीय वायु सेना, जामनगर, गुजरात

"केवल नाम जपो, नाम जप से ही आपका कल्याण होगा।"

एड्स को मात दे, कर ली शादी

!! एड्स ही मरा, गंगा नहीं ! गंगा तो गोविन्द से मिल गया !!

आज मेरे दो बच्चे है जो पूर्णत : स्वस्थ हैं तथा पत्नी के भी एड्स नहीं है। जबकि विज्ञान के अनुसार यदि पति एच आई वी पीड़ित है तो पत्नी भी होगी। सिद्धयोग से आगे विज्ञान नहीं है।



मैं एच आई वी पीड़ित था। शादी से पहले अचानक मेरी तबीयत बिगड़ गई। जब हॉस्पिटल में चैक अप कराया तो जाँच में एच आई वी का होना पाया गया। शादी निरस्त कर मुझे हॉस्पीटल में भर्ती कर दिया। वहाँ कोई स्थाई इलाज नहीं हुआ।

मेरे छोटे भाई को गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग दर्शन की जानकारी थी। वह मुझे गुरुदेव के आश्रम ले आया। गुरुवार को गुरुदेव से दीक्षा लेकर नियमित नाम जप व ध्यान शुरू कर दिया। कुछ समय बाद मैं पूर्णतः स्वस्थ हो गया। **एक बार मैंने पूछा कि गुरुदेव पहले मैं एड्स से पीड़ित था। लेकिन अब मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ। क्या मैं शादी कर लूँ? गुरुदेव ने कहा कि शादी कर ले।**

मैंने शादी कर ली। आज मेरे दो बच्चे है जो पूर्णत : स्वस्थ है तथा पत्नी के भी एड्स नहीं हैं। जबकि विज्ञान के अनुसार यदि पति एच आई वी पीड़ित है तो पत्नी भी होगी। सिद्धयोग से आगे विज्ञान नहीं है। ये बात गुरुदेव ने समझा दी।

गंगाराम सारण, चौहटन, बाड़मेर(राज.)

"धर्म क्या है"

"विभिन्न मत मतान्तरों या सिद्धांतों पर विश्वास करने के प्रयत्न हिन्दू धर्म में नहीं है, वरन् हिन्दू धर्म तो **प्रत्यक्षानुभूति या साक्षात्कार** का धर्म है। केवल विश्वास का नाम हिन्दू धर्म नहीं है, हिन्दू धर्म का मूल मंत्र तो **"मैं" आत्मा** हूँ यह विश्वास होना और **"तद्रूप"** बन जाना है।"

- स्वामी विवेकानन्द

"मंत्र की महिमा"

केवल नाम जपने से, जो समझा नहीं जा सकता, समझ लिया जाता है। केवल नाम जपने से, जो देखा नहीं जा सकता, देख लिया जाता है।

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी

◆ **मुझे वही शिष्य प्रिय है, जो नाम जप करता है, चेतन है। सातों कोश चेतन हो जाएंगे, मेरे गुरु की कृपा से।**

◆ हर युग में मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखकर ही आराधना की विधि तय होती है। अब कलियुग में केवल हरि नाम का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा देता है। **कलियुग केवल नाम आधारा, सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा।**

◆ यह राधा और कृष्ण का मंत्र है। इसमें दोनों तत्त्व शामिल है। राधा तत्त्व सांसारिक सुख देगा व कृष्ण तत्त्व मोक्ष।

◆ ये चेतन मंत्र है, Enlightened है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है, असंख्य ऋषियों की कमाई है-इस मंत्र में।

◆ **यह बीज मंत्र है। जिस तरह बरगद का बीज राई जितना छोटा होता है और बड़ा होकर विशाल वृक्ष बन जाता है।**

◆ यह संजीवनी मंत्र है, आप चाहे किसी भी बीमारी से पीड़ित हो-एड्स, कैंसर व हेपेटाइटिस बी आदि। इस मंत्र को जपोगे तो उस बीमारी से नहीं मरोगे।

◆ गुरु द्वारा प्राप्त मंत्र ही सारे Purpose Serve (उद्देश्यों की पूर्ति) करता है।

◆ इस शरीर रूपी सुन्दर ग्रंथ को पढ़ना चाहते हो तो नाम ही जपो।

◆ नाम जप से विघ्नों का नाश होता है, विघ्नों का अभाव होता है।

◆ **नाम जप को भगवान् श्री कृष्ण ने सबसे उत्तम यज्ञ की संज्ञा दी है।**

◆ बड़ी सीधी आराधना है, आपको कुछ नहीं करना, बस भगवान् का नाम जपना है, उसी से परिवर्तन आ जाएगा।

◆ नाम जप में किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं होती। कर्मकाण्ड यज्ञ करोगे, आग में घी, लकड़ी वगैरह जलाओगे तो उसमें थोड़े बहुत जीव जलेंगे।

◆ जप यज्ञ, कर्मकाण्डी यज्ञों से हजार गुना ज्यादा फायदा देता है।

◆ **लोग समाधि और ध्यान के लालच में नाम जप को ढीला छोड़ देते हैं, साफ कह रहा हूँ, नाम जप को ढीला मत छोड़ो।**

◆ नाम जप ही चाबी है, इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जप करो। आपको सिर्फ नाम जप व ध्यान करना है, आगे की Duty (कर्त्तव्य) गुरु की है। ◆◆◆◆◆◆

शब्दों के पुँज, जो कुछ कहते हैं-

भगवान् स्वयं मार्ग पर चलकर मनुष्यों को राह दिखाने के लिये **'मनुष्य'** का रूप धारण करते हैं और बाहरी मानव प्रकृति को स्वीकार करते हैं। पर इससे उनका **'भगवान्'** होना खत्म नहीं हो जाता।

यह एक अभिव्यक्ति होती है, बढ़ती हुई भागवत चेतना अपने-आपको प्रकट करती है। **-महर्षि श्री अरविन्द**

महर्षि अरविंद ने कहा है-"जो ज्ञान हमारे "ऋषि-मुनियों" ने प्राप्त किया था, वह पुनः लौट कर आ रहा है। हमें उसका दान पूरे विश्व को करना है।"

स्वामी विवेकानन्द जी ने दान की व्याख्या करते हुए कहा था कि संसार में तीन ही मुख्य दान माने गए हैं- **प्राण दान, विद्या दान व तीसरा ज्ञान दान (अध्यात्म का दान)** संसार में ज्ञान दान ही सर्वोत्तम माना गया है। और हमें **"अध्यात्म का दान"** ही पूरे विश्व को करना है।

"पश्चिम के लोग भौतिक जीवन को उसकी चरम सीमा तक पहुँचा चुके हैं। अब एक ऐसी चीज की जरूरत है जिसे देना उनके वश की बात नहीं है। क्योंकि यह कार्य आत्मा और अन्तः चेतना की अभिवृद्धि द्वारा ही होगा और इसका प्रारम्भ भारत ही करेगा।" -श्री अरविन्द

"हमारी **'एकाग्रता'** द्वारा सभी क्षमताएँ जाग सकती हैं, अपनी **'अभीप्सा'** द्वारा हम उन्हें पा सकते हैं, अपने **'समर्पण'** द्वारा हम उन्हें **'आत्मसात्'** कर सकते हैं। तुम जो कुछ चाहते हो, गुरु में भगवान् का वही पक्ष देखने की कोशिश करो और उसके प्रति खुलो।" -महर्षि श्री अरविन्द

"**अभागा** है वह मनुष्य या राष्ट्र जो भागवत मुहूर्त के आने पर सोया हुआ रहे या उसके उपयोग के लिए तैयार न हो- और कहीं अभागे हैं वे जो सशक्त और तैयार होते हुए भी उस शक्ति का अपव्यय करते हैं, उनके भाग्य में होती है पूरी न हो सकने वाली क्षति या एक महाविनाश।" **- श्रीमां**

"**हे प्रभो !** हे सर्वविघ्न विनाशक ! तेरी जय हो। वर दे हमारे अन्दर की कोई भी चीज तेरे कार्य में बाधक न हों। वर दे कि कोई भी चीज तेरी अभिव्यक्ति में रूकावट न डालें।

वर दे कि हर वस्तु में तथा प्रत्येक क्षण में **तेरी ही इच्छा** पूर्ण हो। **-श्री मां**

"जब एक महान् जन समुदाय धूल में से उठ खड़ा होता है तो कौनसा मंत्र है अथवा उसे पुनर्जीवित करने वाली कौनसी शक्ति है ? भारत में **दो महामंत्र** है, एक तो "**वन्दे मातरम्**" का मंत्र है, जो मातृभूमि के प्रति जनता के जाग्रत प्रेम की सार्वभौम पुकार है। और दूसरा अधिक गुप्त और रहस्यपूर्ण है जो अभी उद्‌घाटित नहीं हुआ है।' **-श्री अरविन्द, 'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक से पृष्ठ-37**

"मैंने मानवता के लिए '**परात्पर**' से उतना बड़ा '**वरदान**' प्राप्त किया है, जितना यह पृथ्वी माँग सकती थी। शीघ्र ही चेतना के '**ऊर्ध्व लोक**' से एक '**भागवत शक्ति**' का अवतरण होगा जो पृथ्वी पर स्थापित **मृत्यु** और **असत्य** के राज्य को समाप्त कर यहाँ भी भगवान् के राज्य की स्थापना करेगी।" **-श्री अरविन्द**

"भारत की महानता बिल्कुल स्पष्ट है। भारत संसार का गुरु है। जगत् की भावी संरचना भारत पर निर्भर है। भारत जीवित जाग्रत आत्मा है। भारत जगत् में आध्यात्मिक ज्ञान को मूर्तिमान कर रहा है।" **-श्री अरविन्द**

16 वीं कला 'नाम'

प्रश्नोपनिषद् (अथर्ववेद का) के प्रश्न 6 में कहा है-

स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियं।

मनोऽन्नमन्नाद्वीर्यं तपो मंत्राः कर्म लोका लोकेषु नाम च।।4

भावार्थ- "उस पुरुष ने '**प्राण**' को रचा, फिर प्राण से श्रद्धा, आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन और अन्न को तथा अन्न से वीर्य, तप, मंत्र, कर्म और लोकों को एवं लोकों में '**नाम**' को उत्पन्न किया।।4।।

भगवान् श्री कृष्ण 16 कला युक्त पूर्णावतार हैं। प्रश्नोपनिषद में उस परम पुरुष द्वारा लोकों में जिस (16 वें तत्त्व) नाम को रचने की बात कही गई है, उसी **नाम के सहारे** बाकी सभी **तत्त्वों** का भेदन करते हुए **जीवात्मा** का **परमात्मा** अर्थात् **परम पुरुष** को प्राप्त होना ही '**मोक्ष**' है। '**शब्दब्रह्म**' से '**परब्रह्म**' को प्राप्त होने के उपर्युक्त सिद्धांत को ही हमारे सभी संतों ने एक मात्र '**सच्चा पथ**' माना है। **-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग**

कहानी....

सच्चा प्रेम

जिसका कोई नहीं, उसका वो

उस मातृ-हृदय ने उस **अलौकिक तत्त्व में दिव्य चरवाहे** के रूप में अपने पुत्र गोपाल को पाया। उसकी आत्मा जो **यन्त्रवत्** ही सांसारिक पदार्थों में, उसकी आत्मा जो दैवी आकाश में निरन्तर मँडराती हुई किसी भी, लौकिक वस्तु के सम्पर्क से स्वखलित हो सकती थी, वह मानो इस बालक में अपने लिए एक लौकिक आश्रय जाग गयी। केवल यही एक चीज थी, जिस पर वह अपना समस्त लौकिक सुख एवं अनुराग केन्द्रित कर सकती थी। उसका प्रत्येक विचार, प्रत्येक सुख और उसका जीवन तक, क्या उस बालक के लिए ही था, जिसके कारण वह अब भी जीवित थी?

वर्षों तक एक माँ की **ममता** के साथ वह रोज अपने बच्चे को दिन-दिन बढ़ते हुए देखती रही। और जब वह स्कूल जाने लायक हो गया है, उसे अब भी उसकी पढ़ाई-लिखाई का सामान जुटाने के लिए कितना कठिन श्रम करना पड़ता था। हालांकि ये सब सामान बहुत थोड़े से थे। उस देश में जहाँ के लोग **मिट्टी के दीपक** के प्रकाश में कुश-काँस की चटाई पर निरन्तर विद्याध्ययन करते हुए सन्तोषपूर्वक सारा जीवन बिता देते हैं, वहाँ एक विद्यार्थी की आवश्यकताएँ ही कितनी रही होगी? फिर भी कुछ तो थी ही; पर इतने से जुगाड़ के लिए भी बेचारी माँ को कई दिनों तक घोर परिश्रम करना पड़ता था। गोपाल के लिए एक धोती, एक चादर और चटाई का बस्ता, जिसमें लिखने का अपना ताड़-पत्र और सरकण्डे की कलम समेटकर, वह पढ़ने के लिए पाठशाला जाता था, और **स्याही-दवात**। इन सब को खरीदने के लिए उसे अपने चरखे पर कई-कई दिनों तक काम करना पड़ता था।

एक शुभ दिन, गोपाल ने जब पहले-पहल लिखने का श्रीगणेश किया, उस समय का, उसका आनन्द केवल एक माँ का हृदय-एक गरीब माँ का हृदय-ही जान सकता है, उस जीवन दायिनी माँ के हृदय में अपार खुशी थी।

लेकिन आज उसके मन पर एक दुश्चिन्ता छायी हुई है। गोपाल को अकेले जंगल में से होकर जाने में डर लग रहा है। **इसके पहले कभी उसे अपने वैधव्य की, अपने एकाकीपन और निर्धनता की अनुभूति इतने कटु रूप में नहीं हुई थी।** एक क्षण के लिए उसके सामने कुछ अन्धकारमय हो गया, किन्तु तभी उसे प्रभु के शाश्वत आश्वासन का स्मरण हो आया कि '**जो सब चिन्ताएँ त्यागकर मेरे शरणागत होते हैं, मैं उनकी समस्त आवश्यकताएँ पूर्ण कर देता हूँ।**' और इस

आश्वासन में पूर्णतया विश्वास करने वालों में एक उसकी भी आत्मा थी।

अतः माता ने अपने आँसू पोछ लिये और अपने बच्चे से कहा कि डरो नहीं ! **जंगल में मेरा एक दूसरा बेटा रहता है और गायें चराता है। उसका भी नाम गोपाल है।** जब भी तुम्हें जंगल में जाते समय डर लगे, अपने भैया को पुकार लिया करना।

बच्चा भी तो आखिर उसी माँ का बेटा था, उसे विश्वास हो गया। कोई **तर्क नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास, उसको पाने का यही तो सच्चा राज है।**

उसी दिन पाठशाला से घर लौटते समय जंगल में जब गोपाल को डर लगा, बस उसने अपने चरवाहे भाई गोपाल को पुकारा, '**गोपाल भैया ! क्या तुम यहीं हो ?** माँ ने कहा था कि तुम हो और मैं तुम्हें पुकार लूँ। मैं अकेले डर रहा हूँ।' और पेड़ों के पीछे से एक आवाज आयी, 'डरो मत छोटे भैया, मैं यहीं हूँ, निर्भय होकर घर चले जाओ।

इस तरह रोज वह बालक पुकारा करता था और रोज वही आवाज उसे उत्तर देती थी। माँ ने यह सब आश्चर्य एवं प्रेम के भाव से सुना और गोपाल को सलाह दी कि अब की बार वह अपने जंगल वाले भाई को सामने आने के लिए कहे।

दूसरे दिन जब वह बालक जंगल से गुजर रहा था, उसने अपने भाई को पुकारा। सदा की भाँति ही आवाज आयी। लेकिन बालक ने भाई से कहा कि वह सामने आये। उस आवाज ने उत्तर दिया। 'आज मैं बहुत व्यस्त हूँ भैया, नहीं आ सकता।' लेकिन बालक ने हठ किया, तब वह पेड़ों की छायाओं से **एक ग्वाले के वेश में सिर पर मोरपंख का मुकुट पहने और हाथ में मुरली लिये बाहर निकल आया।** वे दोनों ही गोपाल आपस में मिलकर बड़े खुश हुए। वे घण्टों जंगल में खेलते रहे-पेड़ों पर चढ़ते, फल-फूल बटोरते, पाठशाला जाने में देर हो गयी। तब अनिच्छापूर्वक बालक गोपाल पाठशाला के लिए चल पड़ा। वहाँ उसे अपना कोई पाठ याद न रहा, क्योंकि उसका मन तो इसमें लगा था कि कब वह जंगल में जाकर अपने भाई के साथ खेले। इसी तरह महीनों बीत गये।

माँ बेचारी यह सब रोज-रोज सुनती थी और **ईश्वरकृपा** के आनन्द में अपना वैधव्य, अपनी गरीबी सब कुछ भूल जाती थी, **और हजार बार अपनी निर्धनता को धन्य मानती थी।** इसी पाठशाला के गुरुजनों के अपने पितरों के सम्मानार्थ कुछ धार्मिक कृत्य करने थे। इन ग्राम-शिक्षकों को, जो निःशुल्क रूप से कुछ बालकों को इकट्ठा करके पाठशाला चलाते थे, खर्च के लिए **यथावसर** प्राप्त होने वाली भेंटों पर ही निर्भर रहना पड़ता था।

प्रत्येक शिष्य को भेंट में धन अथवा वस्तुएँ लानी होती थी। और विधवापुत्र

अनाथ गोपाल को ? दूसरे लड़के जब यह कहते कि वे भेंट में क्या-क्या लायेंगे, तब वे गोपाल के प्रति तिरस्कार से मुस्कराया करते थे।

उस रात गोपाल का मन बहुत भारी था। उसने अपनी माँ से गुरुजी को भेंट में देने के लिए कुछ माँगा। लेकिन बेचारी माँ के पास भला क्या रखा था ? लेकिन उसने हमेशा की तरह इस बार भी अपने गोपाल पर ही निर्भर रहने का निश्चय किया, और अपने पुत्र से बोली कि वह **वनवासी अपने भाई** से गुरु को भेंट देने के लिए कुछ माँगे।

दूसरे दिन सदा की भाँति जब गोपाल जंगल में अपने **चरवाहे भाई** से मिला और जब थोड़ी देर तक खेल-कूद चुके, तब गोपाल ने अपने भाई को बताया कि उसे क्या दुःख है ? और अपने गुरुजी को देने लिए कोई भेंट माँगी। चरवाहे बालक ने कहा, '**भैया गोपाल** ! तुम तो जानते ही हो कि मैं एक मामूली चरवाहा हूँ और मेरे पास धन नहीं है, लेकिन यह मक्खन की हँडियाँ तुम लेते जाओ और अपने गुरुजी को भेंट कर दो।' गोपाल इस बात से बहुत खुश हुआ कि अब उसके पास भी गुरुजी को भेंट देने के लिए कोई चीज हो गयी है, लेकिन इस बात की उसे और भी खुशी थी कि यह भेंट उसे अपने **वनवासी भाई** से प्राप्त हुई है।

वह खुशी-खुशी गुरु जी के घर की तरफ बढ़ा और जहाँ बहुत से लड़के गुरुजी को अपनी-अपनी भेंट दे रहे थे, वहीं सबसे पीछे **उत्सुकता** से खड़ा हो गया। सबके पास भेंट देने को विभिन्न प्रकार की अनेक वस्तुएँ थी। और किसी को भी बेचारे **अनाथ बालक** की भेंट की तरफ देखने तक की फुरसत न थी। वह उपेक्षा अत्यन्त **असह्य** थी। गोपाल की आँखों में आँसू आ गये। तभी सौभाग्य से गुरुजी की दृष्टि उसकी ओर गयी। उन्होंने गोपाल के हाथ से मक्खन की हाँड़ी ले ली और उसे एक बड़े बरतन में उँड़ेला और वह फिर भर गयी। और इस तरह से होता गया। जब तक वे मक्खन उँड़ेलकर खाली करें कि वह फिर भर जाती थी।

इससे सभी लोग चकित रह गये। तब गुरुजी ने अनाथ बालक को गोद में उठा लिया और मक्खन की हाँड़ी के बारे में पूछा। गोपाल ने अपने वनवासी चरवाहे भाई के बारे में सब कुछ बता दिया कि कैसे वह उसकी पुकार का जवाब दिया करता था, कैसे वह उसके संग खेला करता था और अन्त में बताया कि कैसे उसने मक्खन की हाँड़ी दी ?

गुरुजी ने गोपाल से कहा कि वह उसे जंगल में ले चल, अपने भाई को दिखलाये। गोपाल के लिए इससे बढ़कर **खुशी** की बात और क्या हो सकती थी ?

उसने अपने भाई को पुकारा कि वह सामने आए। लेकिन उस दिन उत्तर में कोई आवाज नहीं आई। उसने कई बार पुकारा। कोई उत्तर नहीं। और वह जंगल में अपने

भाई से बात करने के लिए घुसा। उसे भय था कि उसके गुरुजी कहीं उसे झूठा न मान लें। तब बहुत दूर से आवाज आई।

'गोपाल ! तुम्हारी मां और तुम्हारे प्रेम एवं विश्वास के कारण ही मैं तुम लोगों के पास आया था, लेकिन अपने गुरुजी से कह दो कि उन्हें अभी बहुत दिनों तक इंतजार करना होगा।'

लेकिन आज वह निर्गुण निराकार का सगुण साकार रूप सद्‌गुरु धरती पर है। जो उनका सानिध्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं, वे धन्य हैं। सच्चा प्रेम ही ठेट परब्रह्म तक ले जाता है। सृष्टिकाल से मध्यकाल तक तो वह शक्ति विरलों को ही दूर से आवाज देती या उनको दर्शन देती थी। लेकिन आज वो निकट से आवाज दे रही है। यदि कोई उनको पुकारे।

आज वो आवाज बीहड़ जगंलों से नहीं बल्कि निकट, अति निकट से आ रही है। करोड़ों के उद्धार का समय है। वही मोर मुकुट धारित बाल- गोपाला धरा पर है। क्या उसके साथ नहीं खेलोगे ? यदि हाँ तो, बस **सद्‌गुरु छवि** का **आज्ञाचक्र** पर ध्यान कर लो, रहस्य खुल जाएगा।

-मोहित कुमार यादव, गादूवास (अलवर) राज.

अवतार और पैगम्बर

पैगम्बर संदेश लेकर आता है, वह केवल संत पुरुषों को प्रभावित करता है तथा उनकी आस्था ईश्वर के प्रति दृढ़ करता है। जिससे कुछ काल के लिए शांति स्थापित होती है। परन्तु राक्षस वृत्ति के लोग पैगम्बर की बात को नहीं मानते हैं। **यीशु** और **मूसा** के साथ यही हुआ।

परन्तु **"अवतार"** का होना युग परिवर्तन का संकेत है। **सत्‌युग, त्रेता व द्वापर** इसके प्रमाण हैं। कलियुग की समाप्ति भी उस **परमसत्ता** के पृथ्वी पर अवतरण के बाद होगी। **"सत्‌लोक"** और **"अलख लोक"** की शक्तियाँ 'त्रेता' और 'द्वापर' में अवतरित हो चुकी हैं। कलियुग की समाप्ति के लिए अब **"अगम लोक"** की सर्वोच्च शक्ति को अवतार लेना होगा।

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

आध्यात्मिक जीवन का मतलब भौतिक संसार से विरक्ति नहीं

– समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

इस युग में आध्यात्मिक जीवन की व्याख्या बड़े विचित्र ढंग से की गई है। इन मन घड़न्त और कृत्रिम जीवन मान्यताओं के कारण ही इस युग का मानव **अध्यात्मवाद** को निरर्थक और कोरा ढोंग मानता है। यही कारण है कि इस युग में धर्म का अधिक ह्रास हुआ है। किसी भी कार्य के करने से उसका ठोस परिणाम निकलना चाहिए। परन्तु इस युग में आराधना का जो निर्जीव स्वरूप बचा है, वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी रूप में कोई परिणाम नहीं देता है। हमें केवल काल्पनिक रूप से कोरा विश्वास करने की आज्ञा दी जाती है।

हमारे सभी संतों ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि '**धर्म**' **प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है।** केवल विश्वास का नाम धर्म नहीं है। जीवन के हर कार्य में ईश्वरीय शक्ति काम करती है। ऐसा कोई कार्य नहीं है, जिसमें ईश्वरीय शक्ति काम न करती हो। धर्म का संबंध बाहरी प्रदर्शनों से बिलकुल नहीं है। कोरे कर्मकाण्ड, शब्द जाल और तर्क शास्त्र से उस परम सत्ता से कभी भी साक्षात्कार संभव नहीं। इस युग में निर्जीव वस्तुओं से सजीव प्राणी को उस परम चेतन सत्ता से जोड़ने का निरर्थक प्रयास करवाया जा रहा है। त्याग, वैराग्य, तप, दान, धर्म, ज्ञान, पाप, पुण्य आदि के काल्पनिक चित्र दिखाकर मानव को गुमराह और भ्रमित करने के अलावा आज कुछ भी नहीं हो रहा है। ऐसी स्थिति में मानव का धर्म से विद्रोही होना न्याय संगत है। इस युग का मानव अब अंधेरे में भटकने को तैयार नहीं है।

भगवान् **श्रीकृष्ण** ने गीता में जो उपदेश दिया और उससे अर्जुन को जो ज्ञान मिला, वही सच्चा ज्ञान है। अर्जुन ने उपदेश के बाद जो कार्य किया जो रास्ता अपनाया, वही सही मार्ग है। भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक शक्ति की देन है। अतः विज्ञान और अध्यात्म में भेद करना भूल है। जिस समय **आध्यात्मिक शक्ति** का सही ज्ञान भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को हो जाएगा, तत्काल समस्या का समाधान हो जाएगा। जब वैज्ञानिकों को उस परमसत्ता की शक्ति का ज्ञान हो जाएगा तो उनका भ्रम खत्म हो जाएगा। जब इस प्रकार भौतिक विज्ञान, **अध्यात्म विज्ञान** के अधीन कार्य करने लगेगा, **पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आएगा।**

स्नेह निमंत्रण–"अतः मैं संसार के सभी धर्मों के सकारात्मक लोगों को सच्चाई जानने के लिए सप्रेम आमंत्रित करता हूँ। मैं अच्छी प्रकार समझ रहा हूँ कि मेरे माध्यम से जो **शक्ति**, ईश्वर कृपा और मेरे संत सद्‌गुरुदेव की अहेतुकी कृपा के कारण प्रकट हो रही है, वह सार्वभौम है। उस पर किसी भी धर्म विशेष, जाति विशेष या देश विशेष का एकाधिकार नहीं है।" **–सद्‌गुरुदेव सियाग**

सामान्य निर्देश

◆ ध्यान 15 मिनट ही करें। ज्यादा ध्यान करने पर शरीर में गर्मी बढ़ जाती है। हमारे ऋषि-मुनि इसलिए तो नंगे बदन हिमालय की कंदराओं में बैठकर ध्यान करते थे। जीवन की समरसता को बनाए रखने के लिए सिर्फ 15 मिनट ही ध्यान करें।

◆ गृहस्थ जीवन के सभी कर्त्तव्यों का पालन करते हुए, ये आराधना करनी है।

◆ मंत्र जप ही इस आराधना का मुख्य आधार है। इसलिए हर समय सघन नाम-जप करते रहें।

◆ ये आराधना अपने आप में पूर्ण है। अतः अन्य जगह आस्था केन्द्रित नहीं होनी चाहिए।

◆ गुरुदेव के प्रति श्रद्धा, विश्वास, समर्पण व एकनिष्ठता होनी चाहिए।

◆ महिलाएँ तीसों दिन नाम-जप व ध्यान कर सकती हैं।

◆ सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी में मंत्र सीडी कभी भी देख सकते हैं।

◆ तांत्रिक क्रियाएँ, जादु-टोने, ताबीज व भोपों आदि के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए।

◆ आप किसी भी समस्या के समाधान के लिए गुरुदेव से करूण प्रार्थना करें। गुरुदेव ही आपको, आपके अंदर से जवाब देंगे। साधक चाहे कितना ही पहुँचा हुआ हो, उनके प्रति श्रद्धा या उनसे ये नहीं कहना कि मेरी ये अमुख समस्या है, आप गुरुदेव से ध्यान में पूछकर बताओ कि इसका क्या हल हो सकता है? गुरुदेव ने कहा कि "आप मेरे से अंतर्मन से जुड़ो, गुरु आपके अंदर बैठा है, वह आपको अंदर से हजार गुणा सही (Correct) जवाब देगा।" इसलिए आप केवल मात्र गुरुदेव के प्रति ही निष्ठावान रहें। आस्था खण्डित नहीं होनी चाहिए।

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆



गुरुदेव की तस्वीर का कमाल

ASIA PACIFIC INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES, NEW DELHI

गुरुदेव की तस्वीर के ध्यान से कुण्डलिनी जागरण द्वारा दिल्ली के M.B.A. छात्रों में स्वत: ही होती यौगिक क्रियाओं के अद्‌भुत नजारे



क्या एक निर्जीव तस्वीर सजीव पर प्रभाव डाल सकती है? भौतिक विज्ञान के लिए असम्भव हो सकता है। जबकि अध्यात्म विज्ञान ने कर दिखाया, गुरुदेव की तस्वीर का ध्यान करने पर कुण्डलिनी जागरण से यूँ होने लगी स्वत: यौगिक क्रियाएँ!

कल्कि अवतार (24 नवम्बर 1926)

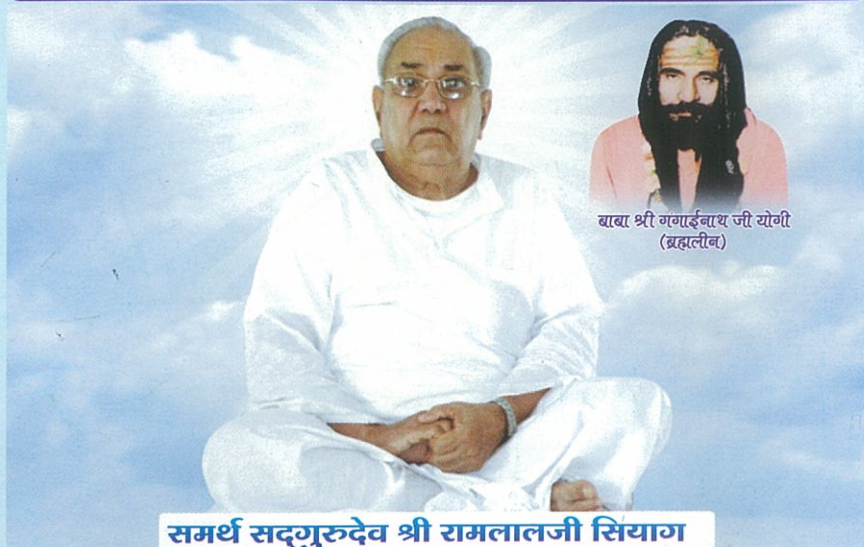


दसवाँ अवतार (कल्कि)

''24 नवम्बर, 1926 को श्री कृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं है। श्री कृष्ण के अवतरण का अर्थ है अधिमानसिक देव का अवतरण, जो जगत् को अतिमानस और आनंद के लिए तैयार करता है। श्री कृष्ण आनंदमय है। वे अतिमानस और अपने आनंद की ओर उद्‌बुद्ध (Inspire) करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।

महर्षि ने इसी सन्दर्भ में कहा था कि मानव रूप में प्रकट हुई वह शक्ति अपने क्रमिक विकास के साथ अतिशीघ्र विश्व के सामने प्रकट हो जाएगी। पूज्य सद्‌गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग का सम्पूर्ण जीवन दर्शन महर्षि की समस्त भविष्यवाणियों से पूर्णत: सत्य साबित हो रहा है।

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?



बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें

ध्यान की विधि

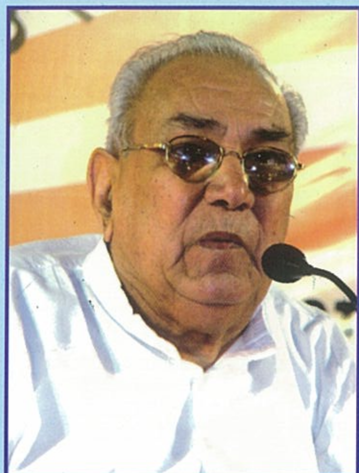
आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें। अपनी समस्या के समाधान हेतु सद्गुरुदेव से करूण प्रार्थना करें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए दिव्य मंत्र का सघन जप करें।

यदि गुरुदेव से दीक्षित नहीं हैं तो कोई भी ईश्वरीय नाम जैसे- गुरुदेव, राम, कृष्ण, वाहिगुरु, जीसस, अल्लाह आदि का मानसिक जप करें (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eyes) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently chant (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.) which you believe in.

During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.



मैं उक्त तीनों जातियों (तमोगुणी, रजोगुणी, सतोगुणी) में ही विश्वास करता हूँ। चौथी जाति गुरु की होती है। इन जातियों के सिवाय अन्य जाति विश्व में हो ही नहीं सकती है। अतः मैं मानव कृत जाति, धर्म और राष्ट्र की सीमाओं का उल्लंघन करते हुए मेरे असंख्य गुरुओं की कमाई का गुरु प्रसाद, जो कि मेरे परमदयालु गुरुदेव की अहैतु की कृपा के कारण अनायास ही मुझे प्राप्त हो गया है, विश्व में बाँटने निकला हूँ। मैं वैदिक दर्शन के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सनातन सिद्धांत में विश्वास करता हूँ। मेरे गुरुदेव का स्पष्ट आदेश है कि माँगने आया कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए।

– समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी

पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595